



पतंजलि विश्वविद्यालय

University of Patanjali

बी.ए. ऑनर्स-संस्कृतव्याकरणम्

2023-2024

## बी.ए. ऑनर्स-संस्कृतव्याकरणम् (BV)

### उद्देश्य :

श्री वामनजयादित्यविरचित पाणिनीय अष्टाध्यायी सूत्रवृत्ति काशिका है। इसमें व्याकरण शास्त्र का सार संग्रह किया गया है, जो अन्यत्र वृत्ति भाष्यादि ग्रन्थों में विस्तृत रूप से था। इसके अध्यापन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं -

- अष्टाध्यायी के सूत्रों का अर्थ, उदाहरण, शब्दसिद्धि तथा सूत्रों में निर्दिष्ट पदों का विस्तृत विवेचनपूर्वक बोध कराना।
- व्याकरण शास्त्र के संस्कृत भाषा सम्बन्धी एवं दार्शनिक सिद्धान्तों से अवगत कराना।
- कात्यायन मुनि प्रणीत वार्तिकों की सप्रसंग अर्थ उदाहरण सहित व्याख्या का बोध कराना।
- पाणिनिमुनि रचित गणपाठ एवं उसमें पठित गणसूत्रों तथा कारिकाओं का ज्ञान कराना।
- महर्षि पतञ्जलि द्वारा भाष्य में निर्णीत सिद्धान्तों का बोध कराना।
- शब्द शास्त्र का सम्पूर्णता से बोध कराना । यतो हि -

“शब्दे ब्रह्मणि निष्णातः परं ब्रह्माधिगच्छति” इति

- वैदिक साहित्य एवं संस्कृत साहित्य के विविध ग्रन्थों का अध्ययन कराना। जिससे कि अपने वैदिक ग्रन्थों एवं संस्कृत साहित्य का परिचय प्राप्त हो सके।

### परिणाम-

- अष्टाध्यायी के सूत्रों का अर्थ उदाहरण शब्दसिद्धि आदि एवं व्याकरण के सिद्धान्तों के बोध से विद्यार्थी संस्कृत भाषा में निर्बाध रूप से गति करता है।
- संस्कृत भाषा के ज्ञान से सम्पूर्ण संस्कृत वाङ्मय को समझने व समझाने में समर्थ हो जाता है।
- दर्शन, गीता उपनिषद् आदि के अध्ययन से वैदिक वाङ्मय के मूल सिद्धान्तों से अवगत होकर समस्त मत पन्थ सम्प्रदायों में समन्वय स्थापित करता हुआ सभी को मार्गदर्शन देता हुआ राष्ट्रनिर्माण में अपना योगदान देता है।
- दर्शन, गीता, उपनिषद् आदि के अध्ययन से वैदिक वाङ्मय के मूल सिद्धान्तों से अवगत होकर संस्कृत व्याकरण के स्पष्ट बोध से, उच्चारण की शुद्धता एवं वक्तृत्व के विकास से वैदिक ज्ञान का मुखरता के साथ उपदेश करता हुआ समाज में फैली हुई मिथ्या मन्यताओं का निराकरण करता हुआ स्वयं को व समाज को श्रेष्ठ मार्ग की ओर अग्रसर करता है।

## B.A. Honours Sanskrit Vyakaran (According to NEP)

Semester -1							
S.No.	Course Type	Course Code	Course Title	Credit			
				L	T	P	Total Credits
1	Discipline Specific Major	BVSAMJ-101	संस्कृतव्याकरणम्-1	4	1	0	5
2	Discipline Specific Minor	BVSAMN-102	संस्कृतव्याकरणम्-2	4	1	0	5
3	Inter Disciplinary	BVSAID-103 (1)	इतिहास:-1	3	1	0	4
		BVSAID-103 (2)	समाजविज्ञानम्-1				
		BVSAID-103 (3)	राजनीतिशास्त्रम्-1				
		BVSAID-103 (4)	संस्कृतसाहित्यम्-1				
4	Ability Enhancement	BVSAAE-104	Communicative English-1	2	0	0	2
5	Skill Enhancement/ Internship	BVSASE-105 (1)	योग चिकित्सा-1	2	0	2	3
		BVSASE-105 (2)	सङ्गीतम्-1				
		BVSASE-105 (3)	Sanskrit With Technology				
6	Value Added	BVSAVA-106 (1)	गीता स्मरणम्	0	0	6	3
		BVSAVA-106 (2)	पञ्चोपदेशस्मरणम्				
		BVSAVA-106 (3)	यज्ञविज्ञानम्				
<b>Total Credits</b>							<b>22</b>
Semester -2							
S.No.	Course Type	Course Code	Course Title	Credit			
				L	T	P	Total Credits
1	Discipline Specific Major	BVSAMJ-201	संस्कृतव्याकरणम्-3	4	1	0	5
2	Discipline Specific Minor	BVSAMN-202	संस्कृतव्याकरणम्-4	4	1	0	5
3	Inter Disciplinary	BVSAID-203 (1)	इतिहास:-2	3	1	0	4
		BVSAID-203 (2)	समाजविज्ञानम्-2				
		BVSAID-203 (3)	राजनीतिशास्त्रम्-2				
		BVSAID-203 (4)	संस्कृतसाहित्यम्-2				
4	Ability Enhancement	BVSAAE-204	पर्यावरणविज्ञानम्	2	0	0	2
5	Skill Enhancement/ Internship	BVSASE-205 (1)	योग चिकित्सा-2	2	0	2	3
		BVSASE-205 (2)	संस्कृतलेखनकौशलम्				
		BVSASE-205 (3)	सङ्गीतम्-2				
		BVSASE-205 (4)	गोविज्ञानम्				
6	Value Added	BVSAVA-206 (1)	दर्शनस्मरणम्	0	0	6	3
		BVSAVA-206 (2)	उपनिषद्-स्मरणम्				
		BVSAVA-206 (3)	योगविज्ञानम् (प्रयोगात्मकम्)				
<b>Total Credits</b>							<b>22</b>
For those students who want to carry the course for Second year							<b>44</b>
<b>Those students want to exit in 1st year they need to complete summer training of credit</b>							<b>4</b>
<b>Grand Total</b>							<b>48</b>
*4 credit over and above of 44 credit to be awarded to those students who want to exit to the course after completing summer training							

Semester -3							
S.No.	Course Type	Course Code	Course Title	Credit			
				L	T	P	Total Credits
1	Discipline Specific Major-1	BVSAMJ-301	संस्कृतव्याकरणम्-5	4	1	0	5
2	Discipline Specific Major-2	BVSAMJ-302	संस्कृतव्याकरणम्-6	4	1	0	5
3	Discipline Specific Minor	BVSAMN-303	संस्कृतव्याकरणम्-7	4	1	0	5
4	Inter Disciplinary	BVSAID-304 (1)	स्वर्णकाल का इतिहास	2	0	0	2
5		BVSAID-304 (2)	समाजविज्ञानम्-3				
6		BVSAID-304 (3)	संस्कृतसाहित्यम्-3				
7	Ability Enhancement	BVSAAE-305	Communicative English-2	2	0	0	2
8	Skill Enhancement/ Internship	BVSASE-306 (1)	सस्वरः वेदपाठः	3	0	0	3
9		BVSASE-306 (2)	सङ्गीतम्				
<b>Total Credits</b>							<b>22</b>
Semester -4							
S.No.	Course Type	Course Code	Course Title	Credit			
				L	T	P	Total Credits
1	Discipline Specific Major-1	BVSAMJ-401	संस्कृतव्याकरणम्-8	5	1	0	6
2	Discipline Specific Major-2	BVSAMJ-402	संस्कृतव्याकरणम्-9	4	1	0	5
3	Discipline Specific Minor-1	BVSAMN-403	संस्कृतव्याकरणम्-10	4	1	0	5
4	Discipline Specific Minor-2	BVSAMN-404	वैदिकदर्शनं साहित्यं च-1	3	1	0	4
5	Ability Enhancement	BVSAAE-405	Communication Technology	2	0	0	2
<b>Total Credits</b>							<b>22</b>
Semester -5							
S.No.	Course Type	Course Code	Course Title	Credit			
				L	T	P	Total Credits
1	Discipline Specific Major-1	BVSAMJ-501	संस्कृतव्याकरणम्-11	5	1	0	6
2	Discipline Specific Major-2	BVSAMJ-502	संस्कृतव्याकरणम्-12	5	1	0	6
3	Discipline Specific Minor	BVSAMN-503	वैदिकदर्शनं साहित्यं च-2	5	1	0	6
4	Internship	BVSASE-504	Yog Ayurved & Naturopathy	0	0	4	4
<b>Total Credits</b>							<b>22</b>
Semester -6							
S.No.	Course Type	Course Code	Course Title	Credit			
				L	T	P	Total Credits
1	Discipline Specific Major-1	BVSAMJ-601	संस्कृतव्याकरणम्-13	5	1	0	6
2	Discipline Specific Major-2	BVSAMJ-602	संस्कृतव्याकरणम्-14	5	1	0	6
3	Discipline Specific Minor-1	BVSAMN-603	वैदिकदर्शनं साहित्यं च-3	4	1	0	5
4	Discipline Specific Minor-2	BVSAMN-604	वैदिकदर्शनं साहित्यं च-4	4	1	0	5
<b>Total Credits</b>							<b>22</b>

बी.ए. ऑनर्स-संस्कृतव्याकरणम्  
प्रथमसत्रम्  
प्रथमपत्रम्- संस्कृतव्याकरणम् ( १ )  
Code- BVSAMJ-101

पूर्णाङ्कः:-100  
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्कः:-75  
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्कः:-25  
समयः-होरात्रयम्

उद्देश्य :

- लौकिक एवं वैदिक शब्दों का अनुशासन एवं अनुशासन विधि प्रत्याहार बोध प्रदान कर विद्यार्थियों की बुद्धि को सूक्ष्म बनाना ।
- संज्ञा सूत्रों, परिभाषा सूत्रों और स्थानिवद् भाव का बोध कराकर व्याकरण ग्रन्थ में उन सूत्रों का बोधन कराना ।

परिणामः

- गुण, वृद्धि, संयोगादि संज्ञाओं को अन्य ग्रन्थों में पहचान कर एक नवीन ग्रन्थ का साहित्य का निर्माण कराने में समर्थ हो जाते हैं।
- भू एधादि धातुओं के रूपों को कण्ठस्थकर सुना सकते हैं तथा अन्य ग्रन्थों में उन रूपों का बोधन कराने में समर्थ हो जाते हैं।
- संस्कृत संभाषण में विशेष धातुरूपों का प्रयोग कर भारतीय संस्कृति व संस्कृत भाषा की वैज्ञानिकत्व का प्रचार करता है।
- संज्ञा सूत्रों का बोधन कराने में कुशल होकर एक श्रेष्ठ अध्यापक बनकर विद्यार्थियों को विद्वान बनाने में समर्थ हो जाता है।
- धातुरूपों की सिद्धि करने में दक्षता आती है।

काशिकावृत्तिः ( प्रत्याहारसूत्रसहितः प्रथमाध्यायस्य प्रथमः पादः )-

इकाई-1 प्रत्याहारसूत्राणि - प्रगृह्यसंज्ञा पर्यन्तम् ( 1.1.19)	19 घण्टे
वृद्धिः, गुणः, संयोगः, अनुनासिकः, सवर्ण, प्रगृह्यम् ।	
इकाई-2 घुसंज्ञा ( 1.1.20)- अनेकाल्शिन्त् सर्वस्य पर्यन्तम् ( 1.1.55)	17 घण्टे
घु, घ, संख्या, षट्, निष्ठा, सर्वनाम, अव्ययम्, सर्वनामस्थानम्, विभाषा, सम्प्रसारणम् इत्यादयः ।	
इकाई-3 स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ ( 1.1.56)- वृद्धसंज्ञा पर्यन्तम् ( 1.1.74)	16 घण्टे
अतिदेशादयः (स्थानिवदादेशः), टिसंज्ञा, उपधा, वृद्धसंज्ञा इत्यादयः ।	
इकाई-4 आख्यातिकः	19 घण्टे
( भ्वादिर्गणः )- भू सत्तायाम् इत्यतः णय गतौ पर्यन्तं धातवः ।	
इकाई-5 आख्यातिकः	19 घण्टे
दय दानगतिरक्षणहिंसादानेषु इत्यतः टुओशिव गतिवृद्धयोः पर्यन्तं धातवः ।	

पाठ्यपुस्तकम्-

- काशिकावृत्ति- श्रीवामनजयादित्यविरचिता  
प्रकाशक- रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा।  
श्रीमद्दयानन्दवेदार्षमहाविद्यालयन्यास, 119 गौतमनगर, नई दिल्ली-49।  
ताराबुक एजेन्सी, वाराणसी।
- आख्यातिकः श्रीमत्स्वामीदयानन्दसरस्वती, प्रकाशक- वैदिक पुस्तकालय, दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर।

सहायकग्रन्थ -

- वार्त्तिकप्रकाश- आचार्य आनन्दप्रकाश, प्रकाशक- चौखम्भा संस्कृत संस्थान वाराणसी।
- व्याकरणकारिकाप्रकाश- पं. सुदर्शनदेवाचार्य, प्रकाशक- हरियाण साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर हरियाणा।

**बी.ए. ऑनर्स-संस्कृतव्याकरणम्**  
**प्रथमसत्रम्**  
**द्वितीयपत्रम्- संस्कृतव्याकरणम् ( २ )**  
**Code- BVSAMN-102**

पूर्णाङ्काः-100  
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75  
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25  
समयः-होरात्रयम्

**उद्देश्य :**

- अतिदेश, स्वर, अशिष्य प्रकरण तथा एकशेष प्रकरण का बोध ।
- महर्षि दयानन्द विरचित नामिक ग्रन्थ के माध्यम से शब्द सिद्धि का बोध कर प्रवचन आदि में उसका प्रयोग करना।

**परिणामः**

- स्वर व अच् के भिन्न-भिन्न भेदों को पहचान कर वेदों में स्वरगान में निपुण हो सकते हैं।
- आकारान्त पुल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग, व हलन्त नपुसंकलिङ्ग के शब्द रूपों के कण्ठस्थ कर सुना सकते हैं एवं अन्य पुस्तकों में विभक्ति सहित पहचानने में समर्थ होते हैं।
- शब्दरूपों की सिद्धि कर पाते हैं एवं प्रकृति प्रत्यय का यथार्थ बोधन कर सम्भाषणादि में उनका प्रयोग करने में समर्थ हो जाते हैं।

**काशिकावृत्तिः ( प्रथमाध्यायस्य द्वितीयः पादः )-**

- इकाई-1** गाङ्कुटादिभ्यो... (1.2.1)- ऊकालोऽङ्भ्र..... (1.2.27) पर्यन्तम् 12 घण्टे  
गाङ्कुटादिभ्यो... इत्यादीनि अतिदेशसूत्राणि, ह्रस्व दीर्घ प्लुत संज्ञा पर्यन्तम् ।
- इकाई-2** अचश्च (1.2.28)- लुपि युक्तवद्व्यक्तिवचने पर्यन्तम् (1.2.51) 12 घण्टे  
उदात्त, अनुदात्त, स्वरित, स्वरसूत्राणि, अपृक्त, उपसर्जन, प्रातिपदिक संज्ञा, युक्तवद्भावश्च।
- इकाई-3** विशेषणानां चाजातेः (1.2.52)- ग्राम्यपशुसंघेष्वतरुणेषु स्त्री (1.2.73)पर्यन्तम् 12 घण्टे  
अशिष्यप्रकरणम् ।
- इकाई-4 नामिकः** 12 घण्टे  
अजन्तप्रकरणम् ( अकारान्ततः- ऐकारान्तपर्यन्तम्)
- इकाई-5 नामिकः** 12 घण्टे  
हलन्तप्रकरणम्, पादादिशब्दप्रकरणम्, सर्वनामशब्दप्रकरणम् ।

**पाठ्यपुस्तकम्-**

- काशिकावृत्ति- श्रीवामनजयादित्यविरचिता  
प्रकाशक- रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा।  
श्रीमद्दयानन्दवेदार्थमहाविद्यालयन्यास, 119 गौतमनगर, नई दिल्ली-49।  
ताराबुक एजेन्सी, वाराणसी।
- नामिकः श्रीमत्स्वामिदयानन्दसरस्वती प्रकाशकः-वैदिक पुस्तकालय, दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर ।

**सहायकग्रन्थ -**

- वार्तिकप्रकाश- आचार्य आनन्दप्रकाश, प्रकाशक- चौखम्भा संस्कृत संस्थान वाराणसी।
- व्याकरणकारिकाप्रकाश- पं. सुदर्शनदेवाचार्य, प्रकाशक- हरियाण साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर हरयाणा।

# बी.ए. ऑनर्स-संस्कृतव्याकरणम्

## प्रथमसत्रम्

तृतीयपत्रम्- इतिहास/सामाजिक विज्ञान/राजनीति शास्त्र-1/संस्कृतसाहित्यम्-1

**Paper Name- History of India-1 BVSAID-103 (1)**  
**(From earliest times till the Mauryan period)**

पूर्णाङ्कः:-100

बाह्यमूल्याङ्कनाङ्कः:-75

आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्कः:-25

समयः:-होरात्रयम्

### Course Objective

This course introduces to the students a gradual evolution of early civilization in Indian and polity from the age of Mahajanapadas to the age of foreign incursions during the Pre-Gupta period. Beginning with a general description of the political condition in the sixth century B.C., emergence of our early culture like Palaeolithic, Mesolithic, Neolithic, chalkolithic, Harappa and Vedic culture are described in the first two unit and political development of rising Magadha empire described in the third unit and Alexandra's invasion of Indian and the origin, development and decline of Mauryan empire are dealt with in last unit

**Course Outcome:** Students will able to:

1. Understand the status of the society and culture of ancient India during the Palaeolithic, Mesolithic, Neolithic, Harappa, and Bronze ages.
2. Identify Approaches towards the sources and the study of ancient Indian history.
3. Understand about India's Vedic and post-Vedic periods, as well as the rise of Jainism and Buddhism as religions and cultures in ancient India.
4. They will exchange ideas about how to separate the Magadha Empire from the other sixteen Janapadas.
5. Understand Great king Asoka's Dhamma and his inscriptions

**इकाई प्रथम-** भारतीय इतिहास को जानने के स्रोत, स्रोतों का महत्व, स्रोतों के प्रकार- साहित्यिक स्रोत, पुरातात्विक स्रोत और विदेशी यात्रियों का विवरण, प्रागैतिहासिक काल का परिचय- पुरापाशाण काल: सोहन संस्कृति एवं मद्रासियन संस्कृति, मध्यपाशाणकाल एवं नवपाशाण काल: कृषि का विकास, आग की खोज, पहिये का अविष्कार, प्रागैतिहासिक काल में औजारों का निर्माण और उनके स्वरूप- पुरापाशाण काल, मध्यपाशाण काल, नवपाशाण काल। प्राग् सैन्धाव एवं ताम्र पाशाण काल का परिचय।

**इकाई द्वितीय-**सैन्धाव सभ्यता: उत्पत्ति और विकास, प्रथम नगरीकरण, सैन्धाव सभ्यता की आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक परिदृश्य, कला का विकास, सांस्कृतिक स्थल के परिवर्तन के कारण, गंगेटिक संस्कृति: वैदिक काल- वैदिक साहित्य की प्रकृति, ऋग्वैदिक कालीन राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक स्थिति, उत्तरवैदिक कालीन राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक स्थिति ।

**इकाई तृतीय-**सैन्धाव सभ्यता में धार्मिक परम्पराओं की उत्पत्ति और धर्म के विविध आयाम, वैदिक काल में धर्म का स्वरूप, प्रकृति पूजा, इन्द्र का बढ़ता महत्व, अग्नि, वरुण, ऋत और मातृ देवी की पूजा का विकास, उत्तर वैदिक काल में धार्मिक प्रथाओं का विकास: धार्मिक अनुष्ठान, यज्ञ की प्रधानता।

**इकाई चतुर्थ-**उपनिषदीय धर्म: आत्मा और सर्वोच्च ब्रह्म की अवधारणा। जैन धर्म: महावीर का प्रारम्भिक जीवन और उनकी शिक्षाएं, बौद्ध धर्म: गौतम बुद्ध का प्रारम्भिक जीवन और उनकी शिक्षाएं ।

**इकाई पंचम-**छठी शताब्दी ई.पू. भारत की राजनीतिक स्थिति (महाजनपद और गणराज्य), मगध साम्राज्य का उदय: हर्यक वंश: बिम्बिसार और अजातशत्रु, शिशुनाग वंश, नंद वंश, महापद्मनंद और घनानंद, सिकंदर का यूनानी आक्रमण, मौर्य वंश: चंद्रगुप्त मौर्य: प्रारम्भिक जीवन और उनका साम्राज्य विस्तार, बिन्दुसार, अशोक: साम्राज्य विस्तार, उनके अभिलेख, धम्म, मौर्य वंश का पतन।

**पाठ्य पुस्तक-** भार्मा एल. पी. प्राचीन भारत, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा, 2022, सिंह उपेन्द्र: प्राचीन और पूर्व मध्यकालीन भारत का इतिहास पाशाण काल से 12 वीं शताब्दी ई. तक, दिल्ली 2016 ।

### Recommended Readings:

Majumdar, R.C.: Prachin Bharat, Motilal Banarasidas Delhi, 1962.

Raychoudhury, H. C., Political History of Ancient India, Calcutta, 1931.

Goyal, S. R., Magadh, Satawahan, Kushan Samrajyon ka Yug (Hindi), Jaipur

Sharma, R. S., Prarambhik Bharat ka Parichay, (Hindi) New Delhi 2017.

Srivastava, K. C., Prachin Bharat ka Itihas Tatha Sanskriti, Allahabad, 2019

Shastri, K. A. N., The Age of Nandas and Mauryas, Varanasi, 1967.

Majumdar, R.C. and A. D. Pusalker (eds.), The History and Culture of the Indian People, Vols. I –V (relevant chapters), Bombay, 1951-1957.

Jha D. N., Ancient India: In Historical Outline, 1997

Jha D. N., Early India: A Concise History, 2004.

## अथवा

### सामाजिक विज्ञान-१ (Code- BVSAID-103 (2))

#### उद्देश्य-

- समाजशास्त्र का बोध कराना।
- सामाजिक अवधारणाओं से अवगत कराना।
- सामाजिक संरचना से परिचित कराना।
- सामाजिक स्तरीकरण एवं गतिशीलता का ज्ञान कराना।
- संस्कृति एवं सभ्यता का विश्लेषणात्मक बोध कराना।

#### परिणाम-

- समाजशास्त्र के बोध से समाज में व्याप्त अच्छाईयों व बुराईयों की जानकारी से बुराईयों को छोड़कर अच्छाईयों में जीने के लिए प्रवृत्त हो जाता है।
- सामाजिक अवधारणाओं के अध्ययन से परिवारिक व सामाजिक एकता व सामंजस्य पूर्वक व्यवहार करने में कुशल हो जाता है।
- संस्कृति व सभ्यता के विश्लेषण से संस्कृति व सभ्यता में पूर्ण निष्ठा व विश्वास रखते हुए उसकी रक्षा करने में तत्पर हो जाता है।

**इकाई प्रथम-** समाज शास्त्र का अर्थ, परिभाषा, क्षेत्र एवं महत्व, समाज शास्त्र की प्रकृति, सामाजिक विज्ञान के रूप में समाज शास्त्र, समाज शास्त्र का अन्य सामाजिक विज्ञान से सम्बन्ध, भारत में समाज शास्त्र का इतिहास।

**इकाई द्वितीय-** समाज की मौलिक अवधारणाएँ, समुदाय, समिति एवं संस्थाओं का अर्थ एवं अवधारणा, सामाजिक समूह, मानव एवं पशु समाज, सामाजिक संस्थाएँ: परिवार, नातेदारी, विवाह, धर्म, शिक्षा एवं राज्य।

**इकाई तृतीय-** संस्कृति एवं सभ्यता, सांस्कृतिक बहुलतावाद, बहुसंस्कृतिवाद एवं सांस्कृतिक सापेक्षवाद, संस्कृति की प्रमुख विषेशता: आत्मसातीकरण, पर-संस्कृतिग्रहण एवं एकीकरण, सामाजिक सांस्कृतिक प्रक्रियाएँ: प्रतिस्पर्धा एवं संघर्ष।

**इकाई चतुर्थ-** सामाजिक संरचना, प्रस्थिति तथा भूमिका, सामाजिक प्रतिमान, जनरीतियाँ, लोकाचार, मूल्य, लोकाचार।

**इकाई पंचम-** सामाजिक स्तरीकरण: अर्थ, रूप एवं आधारभूत तत्व, सामाजिक गतिशीलता: अर्थ, रूप एवं आधारभूत तत्व।

**पाठ्यपुस्तकम्-** गुप्ता, एम. एल. एवं भार्मा, डी. डी., भारत में समाज, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा, 2022

#### सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:

1. Haralambos, M.- (1998) Sociology : Themes and Perspectives , OUP, New Delhi
2. Jayaram , N. – (1998) Introductory Sociology , Macmillan India
3. Mukherjee , R. – (1998) Systematic Sociology , Sage Omen
4. T.K. & Venugopal , C.N. – (1993) Sociology , Estern Book Co.
5. Dube , S.C. – (1992) Understanding change : Anthropological Sociological Perspectives, Vikash Publication House, New Delhi.
6. Smelser, N.J. – (1993) Sociology, Prentice Hall of India Pvt. Ltd. New Delhi
7. Giddens Anthony – (2009) Sociology, Polity Press, London Beteille, Andre – (2002) Sociology Essays on Approach and methods, OUP , New Delhi Gupta
8. Dipankar (Ed.)- Social Stratification, OUP Page 9 of 50 Davis, K.- (1996) Human Society, \
9. Macmillan Goode William, J. – (1998) The Family, Prentice Hall, New Delhi Johnson, Harry A, Sociology , Allied Publishers,



**अथवा**  
**राजनीति शास्त्र-१ (Code- BVSAID-103 (3))**  
**KNOW YOUR CONSTITUTION**

**उद्देश्य-**

- संविधान सभा और संविधान सभा का बोध कराना।
- सरकार के अंगों का ज्ञान कराना।
- संघवाद की अवधारणा से परिचित कराना।
- विकेन्द्रीकरण से अवगत कराना।
- प्रयोगात्मक वक्तव्य का बोध कराना।

**परिणाम-**

- संविधान के अध्ययन से छात्र के अपने अधिकार व कर्तव्य के बोधपूर्वक समाज व राष्ट्र के विधि व निषेध को जानकर विधि का अनुपालन व निषेध का त्याग करने में समर्थ हो जाता है।
- संघवाद के अध्ययन से केन्द्र व राज्य सरकार की शक्तियों का समुचित उपयोग करता हुआ राष्ट्र के उत्थान व उत्कर्ष में सहयोग प्रदान करता है।
- सरकार के अंगों के अध्ययन से विधायिका, कार्यपालिका व न्यायपालिका की विधियों के अनुकूल व्यवहार करने में समर्थ हो जाता है।

**Introduction:** This course acquaints students with the Constitutional design of state structures and institutions, and their actual working over time. The Indian Constitution accommodates conflicting impulses (of liberty and justice, territorial decentralization and a strong union, for instance) within itself. The course traces the embodiment of some of these conflicts in constitutional provisions, and shows how these have played out in political practice. It further encourages a study of state institutions in their mutual interaction, and in interaction with the larger extra-constitutional environment.

**UNIT-I: The Constituent Assembly and the Constitution**

- Formation and working of the Constituent Assembly
- The Philosophy of the constitution: The Preamble and its Features.
- Fundamental Rights, Directive Principles of State Policy, Fundamental Duties

**UNIT-II: Organs of Government**

- The Legislature and the Executive
- The Judiciary: Supreme Court and High Courts

**UNIT-III: Federalism**

- Federalism: Centre-State relations
- Recent trends in federalism

**UNIT-IV: Decentralization**

- Panchayati Raj Institutions: Composition, Powers and functions of Gram Panchayat, Panchayat Samiti and Zilla Parishad
- Municipalities: Composition Powers and function of Municipal Corporation, Municipal Council and Notified Area Council

**Text Books:**

1. G. Austin, (2010) 'The Indian Constitution: Cornerstone of a Nation', New Delhi, Oxford University Press, 15th print.
2. R. Bhargava (ed.) 'Politics and Ethics of the Indian Constitution', New Delhi, Oxford University Press.
3. D. Basu, (2012) 'Introduction to the Constitution of India', New Delhi, Lexis Nexis.

**Reference Books:**

1. Mehra and G. Kueck (eds.) 'The Indian Parliament: A Comparative Perspective', New Delhi, Konark.
2. B. Kirpal et.al (eds.) 'Supreme but not Infallible: Essays in Honour of the Supreme Court of India', New Delhi, Oxford University Press.
3. L. Rudolph and S. Rudolph, (2008) 'Explaining Indian Institutions: A Fifty Year Perspective, 1956-2006', Volume 2, New Delhi, Oxford University Press.
4. M. Singh, and R. Saxena (2011) (eds.), 'Indian Politics: Constitutional Foundations and Institutional Functioning', Delhi: PHI Learning Private Ltd.
5. K. Roy, C. Saunders and J. Kincaid (2006) (eds.) 'A Global Dialogue on Federalism', Volume 3 Montreal, Queen's University .

**अथवा**  
**संस्कृतसाहित्यम्-१**  
**Code- BVSAID-103 (4)**

**उद्देश्य :**

- काव्यदीपिका द्वारा काव्य का सामान्य परिचय, प्रयोजन, शक्तिस्वरूप का बोध कराकर प्राचीन साहित्य की मर्मज्ञता का बोध कराना।
- भाष विरचित दूतवाक्यम् नाटक के माध्यम से शास्त्रीय शैली का कवि तुल्य बोध उत्पन्न करना।
- योगदर्शन ग्रन्थ द्वारा सामाधि का ज्ञान तथा उनके उपायों का ज्ञान प्रदान करना।

**परिणाम:**

- काव्य प्रयोजन/लक्षण और शक्ति त्रय को जानने से छात्र स्वकाव्य निर्माण में दक्ष होकर नव नूतन स्वरचना में निपुण होता है।
- नाटक के अध्ययन से विद्यार्थियों को रङ्गमञ्च पर नाटक मञ्चन करके समाज में जागरुकता की अभिनव क्रान्ति में समर्थ होते हैं।
- योगदर्शन के अध्ययन से योग का स्वरूप, वृतिबोध, अभ्यास-वैराग्य आदि को जानकर विद्यार्थी तत् सम्बद्ध तत्व का सरलता से बोधन कराकर राष्ट्रीय चेतना के उत्थान में सहयोग कर सकता है।

<b>इकाई 1- काव्यशास्त्रम् ( काव्यदीपिका शिखा 1-2 )</b>	<b>15</b>
काव्यशास्त्रोद्भवसामान्यपरिचयः काव्यप्रयोजनलक्षणे, शक्तिस्वरूपनिरूपणम्	
<b>इकाई 2- नाटकम् ( भासविरचितं दूतवाक्यम् )</b>	<b>15</b>
नान्दीपाठः, पात्राणां प्रवेशः, शान्तिदूतस्य श्रीकृष्णस्य प्रवेशः, शान्तिवार्ता, युद्धम् । (क) नाटकोद्भवः/ कविपरिचयः (ख) पात्रपरिचयः/ श्लोकव्याख्या (ग) चरित्रचित्रणम्/ अंकसारः	
<b>इकाई 3- योगदर्शनम् ( प्रथमद्वितीयपादौ )</b>	<b>15</b>
योगस्य स्वरूपम्, क्लिष्टाक्लिष्टवृत्तयः, द्रष्टुः स्वरूपम्, अभ्यास-वैराग्य, सम्प्रज्ञातासम्प्रज्ञातलक्षणम्, ईश्वरस्य लक्षणम् इत्यादि। (क) कण्ठस्थीकरणम् (ख) शब्दार्थपुरस्सरं स्वशब्दैरर्थबोधनम्	
<b>इकाई 4- उपनिषद्- ( ईशोपनिषद् )</b>	<b>10</b>
सर्वत्र ईशदृष्टिः, कर्मविधिः, अभेददृष्टिः, ज्ञानमार्गः, कर्ममार्गः (क) कण्ठस्थीकरणम् (ख) विषयात्मकप्रश्नाः	
<b>इकाई 5- गीता- अध्याय- 3</b>	<b>15</b>
ज्ञानयोगः, निष्कामकर्मयोगः, अनासक्तभावेन, नियतकर्मणाम् श्रेष्ठता निरूपणम्, लोकसंग्रहार्थं कर्मणः निष्पत्तिः, भगवते च कर्मणः अपर्णम् इत्यादि । (क) श्लोककण्ठस्थीकरणम् (ख) पदपदार्थज्ञापनम्	

**पाठ्यपुस्तकम्-**

1. काव्यदीपिका- विद्यारत्नकान्तिचन्द्रभट्टाचार्येण संगृहीता, प्रकाशकः- मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि. देहली ।
2. भासनाटकचक्रम्- महाकविभासविरचितम्, प्रकाशकः- मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि. देहली ।
3. योगदर्शन (व्यासभाष्य सहित) सुरेन्द्रचन्द्र श्रीवास्तव, प्रकाशकः- चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी ।
4. ईशादि नौ उपनिषद्, प्रकाशकः- गीताप्रेस गोरखपुर।
5. श्रीमद्भगवद्गीता, प्रकाशकः- दिव्यप्रकाशनम्, दिव्ययोगमन्दिर ट्रस्ट पतंजलि योगपीठ।

**Programme Objectives**

- Develop the students' abilities in grammar, oral skills, reading, writing and study skills
- Students will heighten their awareness of correct usage of English grammar in writing and speaking
- Students will improve their speaking ability in English both in terms of fluency and comprehensibility
- Students will give oral presentations and receive feedback on their performance
- Students will increase their reading speed and comprehension of academic articles
- Students will improve their reading fluency skills through extensive reading
- Students will enlarge their vocabulary by keeping a vocabulary journal
- Students will strengthen their ability to write academic papers, essays and summaries using the process approach.

**Course Specific Outcomes**

- Produce words with right pronunciation
- Develop vocabulary and improve the accuracy in grammar
- Develop the confidence to speak in public
- Demonstrate positive group communication exchanges.
- Ability to speak and write clearly in standard, academic English

**Method of Teaching & Assessment-** Videos, Audio clippings, discussion, written and oral exercises

**Unit-1:** -Syllables (stress in simple words), Rhythm, Intonation, & Revision of Basic Grammar

- Tenses
- Prepositions
- Articles
- Conjunctions
- Modals
- Direct and indirect Speech

**Unit-2:** Reading & Writing

- Vocabulary- Homophones, Homonyms
- Analytical Skills
- Editing Skills- Error Correction
- Article Writing
- Reading Comprehension

**Unit-3:** Listening –

- Audio books
- Podcasts
- Speeches of various renowned Yoga Masters
- Ted Talks

**Unit-4:** - Spoken English

- Accents and dialects
- Extempore
- Oral Report,
- Debates and GDs
- Public Speaking Skills
- Leadership
- Team Work

**Unit-5:** प्रयोगात्मक वक्तव्य

**Text books:** *English Grammar in Use, 4<sup>th</sup> Edition, Cambridge by Raymond Murphy* , Suggested Sources: Britishcouncil.org

**Text books:**

- English Grammar in Use, 4th Edition, Cambridge by Raymond Murphy
- Oxford Handbook for the Foundation Programme by Tim Raine & James Dawson & Stephan Sanders & Simon Eccles – eBook

**Suggested Sources:**

- learnenglish.britishcouncil.org
- learnenglish.britishcouncil.org/general-english/magazine-zone
- British Council e-Books for free - pdfdrive.com/british-council-books.html
- Check Your Vocabulary for English for the IELTS Examination - eBook

# बी.ए. ऑनर्स-संस्कृतव्याकरणम्

## प्रथमसत्रम्

### पञ्चमपत्रम्- योगचिकित्सा-१

Code- BVSASE-105 (1)

पूर्णाङ्कः:-100

बाह्यमूल्याङ्कनाङ्कः:-75

आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्कः:-25

समयः:-होरात्रयम्

#### उद्देश्य :

- भारतीय पुरातन चिकित्सा पद्धति के समन्वित् स्वरूप का बोध कराना ।
- समन्वित चिकित्सा पद्धति के व्यावहारिक एवं प्रयोगात्मक अभ्यास द्वारा साध्य एवं असाध्य रोगों का निदान।
- योग, आयुर्वेद, पञ्चकर्म, षट्कर्म, नेचुरोपैथी, आहार चिकित्सा, यज्ञचिकित्सा, एक्यूपंचर, एक्यूप्रेशर एवं फिजियो थैरेपी जैसे समन्वित् भारतीय पुरातन चिकित्सा पद्धतियों के सैद्धान्तिक एवं प्रयोगात्मक बोध द्वारा योग्य एवं प्रशिक्षित व्यक्तित्व का निर्माण करना।

#### परिणाम :

- समन्वित चिकित्सा पद्धति में प्रशिक्षित विद्यार्थी समाज में साध्य-असाध्य रोगों से पीडित रोगियों को उपचार देकर उन्हें सम्पूर्ण आरोग्य का लाभ प्रदान करता है एवं भारतीय पुरातन चिकित्सा व्यवस्था के प्रचार प्रसार में अपना महत्वपूर्ण योगदान देता है ।
- सेवा निष्ठ आजीविका का आलम्बन लेकर स्वयं आत्मनिर्भर होता हुआ अन्यो को भी रोजगार परख सेवा क्षेत्र में नियोजित करता है, उपकार परख उपचार की एक स्वस्थ परम्परा का संवाहक बनकर समाज को शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक स्वास्थ्य के मार्ग पर अग्रसर करता है ।

इकाई 1-प्राथमिक चिकित्सा अर्थात् रसोईघर	10 घण्टे
इकाई 2- व्याधियों के अनुसार पथ्यापथ्य (भाग-1)	10 घण्टे
इकाई 3- व्याधियों के अनुसार पथ्यापथ्य (भाग-2)	10 घण्टे
इकाई 4- चमत्कारी घरेलू उपचार (भाग-1)	10 घण्टे
इकाई 5- चमत्कारी घरेलू उपचार (भाग-2)	10 घण्टे

#### पाठ्यपुस्तकम्-

उपचार पद्धति, प्रकाशन- द्विव्य प्रकाशन, द्विव्य योग मन्दिर ट्रस्ट, हरिद्वार।

अथवा

संगीत-1

**Code- BVSASE-105 (2)**

1. Notations /Painting /sculpture
2. Biography & life sketch
3. Technical terms used in your art form.
4. Moral stories with special reference to Rasa, Bhava, Anubhava, Vyabhichari etc.
5. Short notes on Rasa,Bhaav, Abhinaya, Nayak-Nayika with reference to your art form.Shastra like the Vedas to the Natyashastra and Ramayana to Malavikagnimitra;“- Sampradaya or traditional practice of the art of sculpture, painting, dance, drama, music, yoga, journalism and other applied arts“- Practical works like presentations, assignments, experimentation, projects, creativity and innovation

**OR**

**Sanskrit with Technology**

**Code- BVSASE-105 (3)**

(Credit 3)

**Unit 1- Computer Fundamentals**

**(8 hours)**

What is Computer, Basic Applications of Computer; Components of Computer System, Computer Memory, Concepts of Hardware and Software; What is an Operating System; Basics of Popular Operating Systems; The User Interface, Folders and Directories, Creating and Renaming of files and folders, Opening and closing of different Windows.

**Unit 2- Introduction to Internet, WWW and Web Browsers**

**(7 hours)**

Basic of Computer networks; LAN, WAN; Concept of Internet; Applications of Internet; connecting to internet; World Wide Web; Web Browsing software, Basics of electronic mail

**Unit 3- Understanding Word Processing/MS Office**

**(12 hours)**

Word Processing Basics; Opening and Closing of documents; Formatting of text; Table handling; Spell check,

**Using Spread Sheet:** Basics of Spreadsheet; Manipulation of cells; Formulas and Functions; Editing of Spread Sheet,

**Making Small Presentation:** Basics of presentation software; Creating Presentation; separation and Presentation of Slides; Slide Show; Taking printouts of presentation / handouts.

**Unit 4- Online Sanskrit Tools**

**(6 hours)**

Samsâdhanî, Sambhâcâ, Sanskrit Heritage, Tools by IIT Kharagpur

**Unit 5- Practical Sanskrit**

**(12 hours)**

Sanskrit Typing and Transliteration (Roman Diacritics)

**References:**

- Fundamentals of Computers by Rajaraman V
- Computer Fundamentals by P K Sinha

## बी.ए. ऑनर्स-संस्कृतव्याकरणम्

### प्रथमसत्रम्

#### षष्ठपत्रम्- गीता-स्मरणम्

Code- BVSAVA-106 (1)  
(Credit-3)

पूर्णाङ्काः:-100

बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः:-75

आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः:-25

समयः:-होरात्रयम्

इकाई 1- अध्याय - प्रथम, द्वितीय, तृतीय	9 घण्टे
इकाई 2- अध्याय - चतुर्थ, पञ्चम, षष्ठ, सप्तम	9 घण्टे
इकाई 3- अध्याय - अष्टम, नवम, दशम, एकादश	9 घण्टे
इकाई 4- अध्याय - द्वादश, त्रयोदश, चतुर्दश, पञ्चदश	9 घण्टे
इकाई 5- अध्याय - षोडश, सप्तदश, अष्टदश	9 घण्टे

#### पाठ्यपुस्तकम्-

श्रीमद्भगवद्गीता- स्वामी रामदेव, द्विव्य प्रकाशन पतंजलि योगपीठ हरिद्वार।

श्रीमद्भगवद्गीता मूलपाठ (सहायक ग्रन्थ)

#### अथवा

#### पञ्चोपदेशस्मरणम्

Code- BVSAVA-106 (2)  
Credit-3

इकाई 1- अष्टाध्यायी	10 घण्टे
इकाई 2- अष्टाध्यायी	10 घण्टे
इकाई 3- धातुपाठ	10 घण्टे
इकाई 4- उणादिकोश	09 घण्टे
इकाई 5- लिङ्गानुशासनम्, पारिभाषिक	06 घण्टे

#### पाठ्यपुस्तकम्-

पाणिनीय शब्दानुशासनम्- सत्यानन्दवेदवागीशः ।

#### सहायक ग्रन्थ-

पाणिनीय अष्टाध्यायी, धातुपाठ, पारिभाषिक, सम्पादकः- स्वामी रामदेव, प्रकाशकः- द्विव्य प्रकाशन पतंजलि योगपीठ हरिद्वार।

अथवा  
यज्ञविज्ञानम्

Code- BVSAVA-106 (3)

- इकाई 1- यज्ञ शब्द का परिचय (निर्वचन व परिभाषा), शास्त्रीय प्रमाण व महत्व आदि। 9 घण्टे
- इकाई 2- यज्ञ के प्रकार, पञ्चमहायज्ञों का परिचय , देवयज्ञ, ब्रह्मयज्ञादि के मन्त्रों की व्याख्या, यज्ञ सामग्री, समिधा आदि का परिचय। 9 घण्टे
- इकाई 3- शास्त्रों में वर्णित यज्ञ के अन्य प्रकार व महत्व, यज्ञ का व्यवहारिक पक्ष । 9 घण्टे
- इकाई 4- यज्ञ का वैज्ञानिक विश्लेषण, यज्ञचिकित्सा शोध कार्य ग्लोबल वार्मिंग समस्या का समाधान। 9 घण्टे
- इकाई 5- यज्ञ का रोगों पर प्रभाव, यज्ञ एवं योग का प्रभाव। 9 घण्टे

**बी.ए. ऑनर्स-संस्कृतव्याकरणम्**  
**द्वितीयसत्रम्**  
**प्रथमपत्रम्- संस्कृतव्याकरणम् ( ३ )**  
**Code- BVSAMJ-201**

पूर्णाङ्कः:-100  
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्कः:-75  
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्कः:-25  
समयः:-होरात्रयम्

**उद्देश्य :**

- इत्संज्ञा तथा आत्मनेपद एवं परस्मैपद विषयक बोध प्रदान कराना ।
- नदी, घि, पद और भ संज्ञाओंका बोध कराकर सम्पूर्ण अष्टाध्यायी में इन संज्ञाओं का क्रियान्वयन करना।
- कारक, निपात, उपसर्ग, गति और कर्मप्रवचनीय आदि संज्ञाओं का बोध कर उसमें प्रवीणता प्राप्त करना।

**परिणाम:**

- आत्मनेपद व परस्मैपद का ज्ञान व प्रयोग करने में समर्थ होकर संस्कृत सम्भाषण में उन रूपों के प्रयोग में निपुणता प्राप्त कर लेता है।
- नदी व घि संज्ञा के प्रयोग देखकर शास्त्रों में शब्दों के यथार्थ स्वरूप को जानने में समर्थ हो जाते हैं।
- कारक प्रकरण के ज्ञान से संस्कृत संभाषण में प्रवीणता आती है।
- धातुओं का कण्ठस्थिकरण कर उनके प्रयोग से संस्कृत में सम्भाषण देकर भारतीयता का प्रचार कर समाज उन्नत बनाते हैं।
- धातुओं को कंठस्थ कर सुनाने में, प्रयोग करने में व अन्य ग्रन्थों में प्रयोग को पहचानने में समर्थ हो जाता है।
- भिन्न-भिन्न धातुओं का प्रयोग कर निबन्ध आदि लेखन में निपुणता आती है।

**काशिकावृत्ति: ( प्रथमाध्यायस्य तृतीयचतुर्थपादौ )**

**इकाई-1 भूवादयोधातवः (1.3.1)- शदेः शितः (1.3.60) 20 घण्टे**

धातुसंज्ञा, इत्संज्ञाप्रकरणम्, अनुदात्तादि आत्मनेपदप्रकरणम् ।

**इकाई-2 म्रियतेर्लुङ्लिङोश्च (1.3.61)- अन्तद्धौ येना..... (1.4.28) 20 घण्टे**

शेषात्कर्तरि परस्मैपदम् प्रकरणम्, विप्रतिषेधः, नदीसंज्ञा, घिसंज्ञा, गुरुलघुसंज्ञे, ।

**इकाई-3 आख्यातोपयोगे (1.4.29)- विरामोऽवसानम् (1.4.110) 20 घण्टे**

कारकप्रकरणम्, हेतुसंज्ञा, निपात, गति, उपसर्ग, कर्मप्रवचनीय, तिङानां पुरुषनिर्धारणम्, संहिता, अवसान संज्ञा: । ।

**इकाई-4 आख्यातिकः (अवशिष्टं नामधातुपर्यन्तम्) 15 घण्टे**

अदादि-स्वादि पर्यन्तम्

**इकाई-5 आख्यातिकः (अवशिष्टं नामधातुपर्यन्तम्) 15 घण्टे**

तुदादि- नामधातुपर्यन्तम् ।

**पाठ्यपुस्तकम्-**

- काशिकावृत्ति- श्रीवामनजयादित्यविरचिता  
प्रकाशक- रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा।  
श्रीमद्दयानन्दवेदार्थमहाविद्यालयन्यास, 119 गौतमनगर, नई दिल्ली-49।  
ताराबुक एजेन्सी, वाराणसी।
- आख्यातिकः श्रीमत्स्वामीदयानन्दसरस्वती, प्रकाशक- वैदिक पुस्तकालय, दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेरा।

**सहायकग्रन्थ -**

- वार्तिकप्रकाश- आचार्य आनन्दप्रकाश, प्रकाशक- चौखम्भा संस्कृत संस्थान वाराणसी।
- व्याकरणकारिकाप्रकाश- पं. सुदर्शनदेवाचार्य, प्रकाशक- हरियाण साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर हरयाणा।



**बी.ए. ऑनर्स-संस्कृतव्याकरणम्**  
**द्वितीयसत्रम्**  
**द्वितीयपत्रम्- संस्कृतव्याकरणम् ( ४ )**  
**Code- BVSAMN-202**

पूर्णाङ्कः:-100  
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्कः:-75  
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्कः:-25  
समयः:-होरात्रयम्

उद्देश्य :

- शास्त्र में पद विधि का बोध एवं सामान्य स्वर प्रकरण का ज्ञान कराना।
- अव्ययीभाव, तत्पुरुष, बहुव्रीहि: और द्वन्द्व समास का पूर्व पर निपात पूर्वक बोध इत्यादि ।
- कारक विभक्तियों एवं उपपद विभक्तियों का बोध ।
- समास में एकवद् भाव एवं लिङ्ग बोध ।
- आर्धधातुकविषयक धात्वादेशो का बोध ।
- तद्राज संज्ञक प्रत्ययों, धातुओं एवं अव्ययों से विहित प्रत्ययो का लुक् इत्यादि ।

परिणाम:

- सभी प्रकार के समास को पहचानने में समर्थ होते हैं तथा
- समस्त पदों का विग्रह करने में समर्थ होते हैं जिससे विद्यार्थी विविध शास्त्रों में उद्धृत संक्षिप्त व जटिल समस्त पदों को समझ पाता है।
- विभक्तियों के प्रयोग में तथा अन्य पुस्तकों में प्रदत्त उदाहरणों को देखकर उसका सूत्र बताने में समर्थ बनते हैं।
- समर्थ शब्द के साथ समर्थ विभक्ति का प्रयोग कर संस्कृत संभाषण में कुशल हो जाते हैं।
- परिभाषाओं के ज्ञापक का विश्लेषण करने में समर्थ होते हैं।
- परिभाषाओं को कण्ठस्थ कर सुनाने में तथा व्याकरण शास्त्र में प्रयोग कर सकते हैं।

**काशिकावृत्ति: ( द्वितीयोऽध्यायः )**

- इकाई-1** समर्थः पदविधि: (2.1.1)- कुगति प्रादयः पर्यन्तम् (2.2.18) 13 घण्टे  
शास्त्रेय पदविधेयः बोधः, अव्ययीभावसमासः, तत्पुरुषसमासः ।
- इकाई-2** उपपदमतिङ् (2.2.19)- चतुर्थी चाशिष्या... पर्यन्तम् (2.3.73) 14 घण्टे  
तत्पुरुषसमास, बहुव्रीहि: द्वन्द्वसमासः, समासस्य पूर्वपरनिपातपूर्वकः, कारकविभक्त्योपपदविभक्त्योः बोध इत्यादि ।
- इकाई-3** द्विगुरेकवचनम् (2.4.1)- लुटः प्रथमस्य..... (2.4.85) 12 घण्टे  
समासे एकवद्भावः लिङ्गबोधश्च आर्धधातुकविषयकः धात्वव्ययैः विहितानां प्रत्ययानां लुक् इत्यादयः ।
- इकाई-4 पारिभाषिकः-** (1-64) 11 घण्टे  
व्याख्यानतो विशेषप्रतिपत्तिः, नहिसंदेहात् .... विभक्तौ लिंगविशिष्टग्रहणं न ।
- इकाई-5 पारिभाषिकः-** (65-158) 10 घण्टे  
सूत्रे लिंगवचनमन्त्रम्-स्वरविधौ व्यंजनमविद्यमानवद् ।

**पाठ्यपुस्तकम्-**

- काशिकावृत्ति- श्रीवामनजयादित्यविरचिता  
प्रकाशक- रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा।  
श्रीमद्दयानन्दवेदार्धमहाविद्यालयन्यास, 119 गौतमनगर, नई दिल्ली-49।  
ताराबुक एजेन्सी, वाराणसी।
- पारिभाषिकः- आचार्य प्रद्युम्न जी , प्रकाशक- ऋषि प्रिंटिंग प्रेस हरिद्वार ।

**सहायकग्रन्थ -**

- वार्तिकप्रकाश- आचार्य आनन्दप्रकाश, प्रकाशक- चौखम्भा संस्कृत संस्थान वाराणसी।
- व्याकरणकारिकाप्रकाश- पं. सुदर्शनदेवाचार्य, प्रकाशक- हरियाण साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर हरयाणा।

# बी.ए. ऑनर्स-संस्कृतव्याकरणम् द्वितीयसत्रम्

तृतीयपत्रम्- इतिहास/सामाजिकविज्ञान/राजनीति शास्त्र-2/संस्कृतसाहित्यम्-2

## इतिहास\*\*

### प्राचीन भारत का इतिहास (BVSAID-203 (1))

पूर्णाङ्कः:-100

बाह्यमूल्याङ्कनाङ्कः:-75

आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्कः:-25

समयः:-होरात्रयम्

#### Course Objective:

They will learn about the rise and expansion of the Gupta Empire in ancient India as well as ho kingdoms in various parts of India after the Empire fell. They can learn about early medieval India's society, economy, and culture. They can learn about the post-Mauryan political systems, particularly the Kushana and Satavahana ones; Gana-Sanghas, the Guptas' rise to power, the growth of the empire, art, architecture, literature, and so on They learn about how the agrarian economy, trade, and the urbanization of towns are changing.

#### Course Outcome:

Students will able to:

1. Understand the status of the society and culture of ancient India during the Palaeolithic, Mesolithic, Neolithic, Harappa, and Bronze ages.
2. Identify Approaches towards the sources and the study of ancient Indian history.
3. Understand about India's Vedic and post-Vedic periods, as well as the rise of Jainism and Buddhism as religions and cultures in ancient India.
4. They will exchange ideas about how to separate the Magadha Empire from the other sixteen Janapadas.
5. Understand Great king Asoka's Dhamma and his inscriptions.

**इकाई प्रथम-** मौर्योत्तर राजवंशः शुंग वंश, कण्व वंश, सातवाहन वंशः गौतमीपुत्र शातकर्णी और यज्ञ श्री सातकर्णी, कलिंग नरेश खारवेल।

**इकाई द्वितीय-** विदेशी राजवंशः इंडो ग्रीकः डेमेट्रियस और मिनेंडर, शक क्षत्रपः मथुरा और पश्चिमी क्षत्रप और पहलव, कुषाण वंशः विम कडफिसस और कनिष्क।

**इकाई तृतीय-**गुप्त वंशः चंद्रगुप्त प्रथम, समुद्रगुप्त, चंद्रगुप्त द्वितीय, कुमारगुप्त और स्कंदगुप्त, गुप्त काल की सांस्कृतिक उपलब्धि, गुप्त काल का पतनः गुप्त काल भारत का स्वर्ण काल।

**इकाई चतुर्थ-**भारत में हूणों का आक्रमण, वाकाटकः वाकाटक काल की सांस्कृतिक उपलब्धियाँ, बंगाल का शशांक, असम का भास्करवर्मन।

**इकाई पञ्चम-**मौर्योत्तर काल से गुप्त काल तक सांस्कृतिक विकास, सामाजिक, आलुथक, धार्मिक स्थिति का विकास, नव भक्ति परंपराओं का उदयः शैववाद, वैष्णववाद, शक्तिवाद, हीनयान, महायान,श्वेतांबर और दिगंबर।

#### प्रयोगात्मक गतिविधियाँ

**पाठ्य पुस्तक-** शर्मा, एल0 पी0: प्राचीन भारत, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा, 2022

सिंह, उपेन्द्रः प्राचीन और पूर्व मध्यकालीन भारत का इतिहास पाषाण काल से 12 वीं शताब्दि ई0 rd, Delhi 2016.

#### Recommended Readings:

Goyal, S.R., Magadh, Satawahan, Kushan Samrajyon ka Yug (Hindi), Jaipur

Narain, A.K., The Indo-Greeks, New Delhi, 1996.

V.S Agarwal, Indian Art, Varanasi, Prithvi Prakasahan, 1972.

Percy Brown, Indian Architecture, Bombay, D.B.Taraporevala Sons &Co, 1940

James Harle, The Art & Architecture of the Indian Subcontinent, Hormonds worth, Penguin, 1988

Sharma, R.S., Prarambhik Bharat ka Parichay, (Hindi) New Delhi 2017.

Raychoudhury, H.C., Prācīn Bhārata Kā Rājanītika Itihāsa (Hindi), Allahabad,

Singh, U., A History of Ancient and Early Medieval India, From The Stone Age To The 12th Century, Delhi 2016

Basham A. L. The Wonder that was India, London

Srivastava, K. C., Prachin Bharat ka Itihās Tatha Sanskriti, Allahabad, 2019

Jha D. N., Ancient India: In Historical Outline, 1997

1. " आयातित पाठ्यक्रम

**अथवा**  
**सामाजिकविज्ञान-2**  
**भारतीय समाज**

**Code- BVSAID-203 (2)**

प्रत्येक समाज की अपनी विशिष्ट संरचना होती है और प्रत्येक समाज के लिए कुछ संस्थाएं सार्वभौमिक होती हैं, अपनी कुछ विशिष्ट बातों के साथ वे प्रत्येक समाज में होती हैं। कुछ परिवर्तनीय कारक और प्रारम्भिक बिन्दु हैं जो समय के साथ समाज को बदलने में सक्षम बनाती हैं। समय चक्र भारतीय समाज की संरचना और परिवर्तनीय कारकों व परिवर्तनीय बिन्दुओं को संचालित करने वाली प्रक्रियाओं के साथ बदलते पहलुओं पर केंद्रित है।

**उद्देश्य:** भारतीय समाज पर इन दो पत्रों का अध्ययन करने के बाद, छात्र भारतीय समाज की मूल संरचना, इसकी ऐतिहासिक घटनाओं, समाज के आधारभूत दार्शनिक संस्थानों के बारे में एक धारणा प्राप्त कर सकता है। परिवर्तित होते संस्थानों, प्रक्रियाओं, कारकों और उन हस्तक्षेपों के बारे में जानें जो भारतीय समाज में परिवर्तन लाते हैं।

**परिणाम:** इस पत्र से एक छात्रों में भारतीय समाज के बारे में परिचित होने की आशा है। यह भारतीय समाज का एक व्यापक, एकीकृत और अनुभव आधारित रूपरेखा प्रस्तुत करेगा। यह आशा की जाती है कि समाज में संचालित संरचना और प्रक्रियाएं, इस पाठ्यक्रम में प्रस्तुत भारतीय समाज में सक्रिय परिवर्तनीय कारक भी छात्रों को अपनी स्थिति और क्षेत्र की बेहतर समझ हासिल करने में सक्षम बनाएंगे।

**इकाई प्रथम-** भारतीय समाज की संरचना और भारतीय समाज के अध्ययन के लिए दृष्टिकोण:

- 1.1 धार्मिक संरचना, भाषायी रचना और नस्लीय रचना
- 1.2 अनेकता में एकता
- 1.3 राष्ट्रीय एकता- अर्थ, खतरे (सांप्रदायिकता, भाषावाद, क्षेत्रवाद)
- 1.4 भारतीय समाज के अध्ययन के दृष्टिकोण: संरचनात्मक-कार्यात्मक, मार्क्सवादी और अधिनस्थ

**इकाई द्वितीय-** हिंदू सामाजिक संगठन की ऐतिहासिक विशेषताएँ और आधार

- 2.1 वर्ण व्यवस्था और प्रासंगिकता
- 2.2 आश्रम और प्रासंगिकता
- 2.3 पुरुषार्थ और आश्रमों के साथ संबंध
- 2.4 कर्म का सिद्धांत

**इकाई तृतीय-** भारत में विवाह और परिवार

- 3.1 हिंदू विवाह संस्कार के रूप में, हिंदू विवाह के उद्देश्य, हिंदू विवाह के रूप।
- 3.2 हिंदू संयुक्त परिवार-अर्थ और विघटन
- 3.3 मुसलमानों और जनजातियों के बीच विवाह
- 3.4 भारत में विवाह और परिवार में परिवर्तन

**इकाई चतुर्थ-** भारत में जाति व्यवस्था?

- 4.1 जाति का अर्थ, परिभाषाएं और विशेषताएं
- 4.2 जाति के कार्य और दुष्परिणाम
- 4.3 जाति व्यवस्था को प्रभावित करने वाले कारक
- 4.4 जाति व्यवस्था में हाल के परिवर्तन

**इकाई पञ्चम-** प्रयोगात्मक गतिविधियाँ

**पाठ्य पुस्तक-** राव, सी.एन. शंकर, भारतीय समाज का समाजशास्त्र, एस.चंद एंड कंपनी प्राइवेट लिमिटेड (संशोधित संस्करण), 2004.

**अथवा**  
**राजनीति शास्त्र-2**  
**भारत का स्वतंत्रता संग्राम एवं स्वातंत्र्योत्तर भारत**  
**Code- BVSAID-203 (3)**

**उद्देश्य-**

- 1857 की क्रान्ति का बोध कराना।
- बंगाल विभाजन व स्वदेशी आन्दोलन से अवगत कराना।
- हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन का बोध कराना।
- गांधीवादी युग से परिचय कराना।

**परिणाम-**

- 1857 की क्रान्ति के बोध से अन्याय व अधर्म के विरुद्ध आवाज उठाने की योग्यता जागृत हो जाती है।
- स्वदेशी आंदोलन के अध्ययन से स्वदेशी शिक्षा, चिकित्सा व पदार्थों का स्वयं उपयोग करते हुए दूसरों को भी उपयोग करने के लिए प्रेरित करता है।
- क्रांतिकारी आंदोलनों के उद्भव के अध्ययन से अपने नीति, नियम, परम्परा, सभ्यता तथा संस्कृति के सत्याग्रही होकर समाज में व्याप्त कुरीतियों व अधर्मों का दमन व निर्मूलन करने की योग्यता जागृत हो जाती है।

**इकाई प्रथम-** 1857 का क्रान्ति, 1857 के क्रान्ति कारण, क्रान्ति की प्रकृति और उसका प्रभाव, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (1885-1905) में गरमदल और नरमदल, राष्ट्रवाद का जन्म।

**इकाई द्वितीय-** बंगाल विभाजन, स्वदेशी आंदोलन, क्रांतिकारी आंदोलनों का उद्भव, भारत में क्रांतिकारी आंदोलनों की मुख्य गतिविधियों के कारण, गदर पार्टी- गठन और गतिविधियाँ।

**इकाई तृतीय-** हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन, भगत सिंह, बटुकेश्वर दत्त, सुभाष चंद्र बोस, आजाद हिंद फौज का गठन, होमरूल आंदोलन।

**इकाई चतुर्थ-** गांधीवादी युग, असहयोग आंदोलन, साइमन कमीशन और नेहरू रिपोर्ट, सविनय अवज्ञा आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलन, क्रिप्स मिशन (सांप्रदायिकता का उदय-माउंटबेटन की योजना और विभाजन), 1947 का भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम।

**इकाई पञ्चम-** स्वतंत्र्योत्तर भारत, पंचवर्षीय योजना का प्रारम्भ, 1962 और 1971 का युवा राष्ट्रीय दल- मार्क्सवादी, समाजवादी, राष्ट्रवादी और क्षेत्रीय दल, जेपी आंदोलन और आपातकाल।

- प्रयोगात्मक गतिविधियाँ

**पाठ्य पुस्तकें-**

1. महाजन, बी.डी. आधुनिक भारतीय इतिहास, एस.चंद, नई दिल्ली, 2022
2. चानरा, बी. इंडियाज स्ट्रगल फॉर इंडिपेंडेंस, एस.चंद, नई दिल्ली, 2022

**सहायक ग्रन्थ-**

1. रामकृष्ण मुखर्जी: ईस्ट इंडियन कंपनी का उदय और पतन
2. आर.सी. मजूमदार, एच.सी. रॉयचौधुरी और कलिकिंकर दत्ता: भारत का एक उन्नत इतिहास (हिंदी में: भारत का बृहद इतिहास)
3. एस.सी. सरकार और के.के. दत्ता: मॉडर्न इंडियन हिस्ट्री, वॉल्यूम-2 (हिंदी में: आधुनिक भारत का इतिहास)
4. क्रिस्टोफर बेली: इंडियन सोसाइटी एंड द मेकिंग ऑफ ब्रिटिश एम्पायर एंडवर्ड थॅम्पसन एंड जी.टी. गैरत: भारत में ब्रिटिश शासन का उदय और पतन।
5. टी.जी.पी.स्पीयर: द ऑक्सफोर्ड हिस्ट्री ऑफ मॉडर्न इंडिया।
6. जी.एस.सरदेसाई: मराठों का नया इतिहास, (हिंदी में: मैराथन का नवीन इतिहास)
7. ए.आर. देसाई: भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि हिंदी में: भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक प्रतिष्ठा)
8. राम लखन शुक्ल: आधुनिक भारत का इतिहास।
9. सत्य राव: भारत में उपनिवेशवाद और राष्ट्रवाद।
10. जी.एन. सिंह: भारतीय संवैधानिक और राष्ट्रीय विकास में मील का पत्थर (हिंदी में भारत का संवैधानिक और राष्ट्रीय विकास)
11. एससी सरकार: बंगाल पुनर्जागरण (हिंदी में: बंगाल का नवजागरण)।

**अथवा**  
**संस्कृतसाहित्यम्-2**

**BVSAID-203 (4)**

**Credit-4**

**उद्देश्य :**

- काव्यदीपिका द्वारा काव्य के भेद, ध्वनि भेद, रस भेद के बोध से काव्य गुणों का विकास करना।
- गद्य कादम्बरी के द्वारा शुकनासोपदेश में यौवराज्याभिषेक पर चन्द्रपीड को शुकनास द्वारा विनय विषयक ज्ञान प्रदान करना।
- आयुर्वेद चरक संहिता के सद्वृत्त के माध्यम से सदगृहस्थ एवं विद्यार्थियों को करणीय अनुकरणीय विषयों का ज्ञान प्रदान करना।

**परिणाम:**

- काव्य के भिन्न-भिन्न भेदों को तथा रसादि को पहचानने में कुशल हो जाता है।
- यौवराज्याभिषेक पर चन्द्रपीड को शुकनास द्वारा प्रदत्त ज्ञान को स्वयं में धारण कर समाज व राष्ट्र में नव जागरण के सोपान गढ़ता है।
- अणिमा, परशरीर प्रवेश आदि विभूतियों की सूक्ष्मता को समझ व समझा पाता है।
- ब्रह्मतत्त्व के महत्व को समझकर समाज में ब्रह्मतत्त्व के प्रति जागृति का प्रसार करता है।
- सद्वृत्त के माध्यम से करणीय अकरणीय विषयों का विवेक रखते हुए स्वयं के एवं अन्य के जीवन को स्वस्थ एवं उन्नत बनाकर योगी, उपयोगी व्यक्तित्व का निर्माण करता है।

**इकाई-1 काव्यशास्त्रम्-( काव्यदीपिका शिखा ३ )**

**10 घण्टे**

काव्यध्वनिरसभेदाः ।

**इकाई-2 गद्यम्-( कादम्बरीतः शुकनासोपदेशः )**

**15 घण्टे**

राजा चन्द्रपीडं युवराजकार्यभारं दित्सते । युवराजस्य शुकनासस्य गृहे गमनम् । यौवनस्य दोषाः ।

कथमुत्तममाचरणीयम् ।

(क) कविपरिचयः

(ख) गद्यत्रय्यां कादम्बर्याः स्थानम् / गद्यव्याख्या

(ग) कथासारः / काव्यगतविशेषताः

**इकाई-३ ( योगदर्शनम्- तृतीयचतुर्थपादौ )**

**26 घण्टे**

अणिमा, परशरीरप्रवेश, आकाशगमनश्च इत्यादीनां विभूतीनां सूक्ष्म विवेचन इत्यादिः।

(क) सूत्रकण्ठस्थीकरणम्

(ख) सूत्रार्थबोधनम्

(ग) समाधिसाधनविषयकप्रश्नाः

**इकाई-४ उपनिषद् ( केनोपनिषद् )**

**09 घण्टे**

इन्द्रियाणां प्रेरकः कः?, जीवात्मा परमात्मनः अंशः, अस्मिन्नेव जन्मनि ब्रह्मतत्त्वज्ञानस्यावश्यकता इत्यादयः ।

(क) कण्ठस्थीकरणम्

(ख) विषयात्मकप्रश्नाः

**इकाई-५ आयुर्वेदः- ( चरकसंहिता सूत्रस्थानस्याष्टमोऽध्यायस्य स्वस्थवृत्तम् )**

**10 घण्टे**

सद्वृत्तस्य लाभः, सद्वृत्तवर्णनम् (कर्त्तव्यनिर्देशः), सद्वृत्त ( करणीय ), सद्वृत्त ( अकरणीय ) इत्यादयः ।

(क) गद्यव्याख्या

(ख) विषयात्मकप्रश्नाः

**पाठ्यपुस्तकम्-**

1. काव्यदीपिका- विद्यारत्नकान्तिचन्द्रभट्टाचार्येण संगृहीता, प्रकाशकः-मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स।
2. शुकनासोपदेश- व्याख्याकारः- रामनरेश झा, प्रकाशकः- मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स।
3. योगदर्शनम् ( व्यासभाष्यसहितम् )-सुरेन्द्र चन्द्र श्रीवास्तव, प्रकाशकः- चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन ।
4. ईशादि नौ उपनिषद्- प्रकाशकः- गीताप्रेस गोरखपुर।
5. चरकसंहिता- महर्षिचरकप्रतिसंस्कृता, प्रकाशकः- राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्, जनकपुरी, नई दिल्ली।

## बी.ए. ऑनर्स-संस्कृतव्याकरणम्

### द्वितीयसत्रम्

#### चतुर्थपत्रम्-पर्यावरणविज्ञानम्

Code- BVSAAE-204

पूर्णाङ्कः:-100

बाह्यमूल्याङ्कनाङ्कः:-75

आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्कः:-25

समयः:-होरात्रयम्

#### उद्देश्य -

- संपूर्ण और इसके संबंधित समस्याओं के रूप में पर्यावरण के बारे में जागरूकता हासिल करें।
- विभिन्न प्रकार के अनुभव प्राप्त करें और पर्यावरण और इसकी संबद्ध समस्याओं के बारे में एक बुनियादी समझ और ज्ञान प्राप्त करें।
- पर्यावरण के लिए चिंता का एक दृष्टिकोण प्राप्त करें।
- पर्यावरणीय समस्याओं की पहचान करने और हल करने के लिए कौशल हासिल करें।
- पर्यावरण के सुधार और संरक्षण में भाग लेते हैं।
- पर्यावरण के सुधार और संरक्षण के लिए उपायों का मूल्यांकन करने की क्षमता विकसित करना।

#### परिणाम-

- पर्यावरण के विभिन्न घटकों से परिचय कराना।
- पर्यावरण के घटक किस प्रकार एक-दूसरे से क्रियात्मक सम्बन्ध रखते हैं ? इसकी समुचित जानकारी देना।
- पर्यावरण के विभिन्न घटकों का मानव के क्रियाकलापों पर प्रभाव का ज्ञान प्रदान करना।
- पर्यावरण प्रदूषण के स्वरूप, कारण तथा प्रभावों का ज्ञान देना।
- पर्यावरण प्रदूषण के निवारण में व्यक्ति एवं समाज की भूमिका को उजागर करना।

#### Unit – I

The Environment: The Atmosphere, Hydrosphere, Lithosphere, Biosphere, Ecology, Ecosystem, Biogeochemical Cycle (Carbon Cycle, Nitrogen Cycle), Environment Pollution: Air Pollution, Water Pollution, Soil Pollution, Radiation Pollution.

#### Unit – II

Population Ecology: Individuals, Species, Pollution, Community, Control Methods of Population, Urbanization and its effects on Society, Communicable Diseases and its Transmission, Non-Communicable Diseases.

#### Unit- III

Environmental Movements in India: Grassroot Environmental movements in India, Role of women, Environmental Movements in Odisha, State Pollution Control Board, Central Pollution Control Board.

#### Unit –IV

Natural Resources: Conservation of Natural Resources, Management and Conservation of Wildlife, Soil Erosion and Conservation, Environmental Laws: Water Act, 1974, Air Act, 1981, The Wildlife (Protection) Act, 1972, Environment Protection, 1986, Natural Disasters and their Management

#### Text Book- पर्यावरण का संक्षिप्त परिचय, डॉ. मधु अस्थाना

पर्यावरण अध्ययन- डॉ. रतन जोशी, साहित्य भवन पब्लिकेशन।

पर्यावरण अध्ययन- अनिदिता बसाक, पियरसन पब्लिकेशन।

पर्यावरण अध्ययन- स्नातक पाठ्यक्रमों के लिए पाठ्यपुस्तक, एरेक भरुचा, ओरियंट ब्लेकस्वांग

पर्यावरण अध्ययन- स्नातक पाठ्यक्रमों के लिए पाठ्यपुस्तक, डॉ. जे.पी. शर्मा लक्ष्मी पब्लिकेशन

## बी.ए. ऑनर्स-संस्कृतव्याकरणम्

### द्वितीयसत्रम्

#### पञ्चमपत्रम्- योगचिकित्सा-२

Code- BVSASE-205 (1)

पूर्णाङ्काः:-100

बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः:-75

आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः:-25

समयः:-होरात्रयम्

#### उद्देश्य :

- भारतीय पुरातन चिकित्सा पद्धति के समन्वित स्वरूप का बोध कराना ।
- समन्वित चिकित्सा पद्धति के व्यावहारिक एवं प्रयोगात्मक अभ्यास द्वारा साध्य एवं असाध्य रोगों का निदान।
- योग, आयुर्वेद, पञ्चकर्म, षट्कर्म, नेचुरोपैथी, आहार चिकित्सा, यज्ञचिकित्सा, एक्यूपंचर, एक्यूप्रेशर एवं फिजियो थेरेपी जैसे समन्वित भारतीय पुरातन चिकित्सा पद्धतियों के सैद्धान्तिक एवं प्रयोगात्मक बोध द्वारा योग्य एवं प्रशिक्षित व्यक्तित्व का निर्माण करना।

#### परिणाम :

- समन्वित चिकित्सा पद्धति में प्रशिक्षित विद्यार्थी समाज में साध्य-असाध्य रोगों से पीडित रोगियों को उपचार देकर उन्हें सम्पूर्ण आरोग्य का लाभ प्रदान करता है एवं भारतीय पुरातन चिकित्सा व्यवस्था के प्रचार प्रसार में अपना महत्वपूर्ण योगदान देता है ।
- सेवा निष्ठ आजीविका का आलम्बन लेकर स्वयं आत्मनिर्भर होता हुआ अन्यो को भी रोजगार परख सेवा क्षेत्र में नियोजित करता है, उपकार परख उपचार की एक स्वस्थ परम्परा का संवाहक बनकर समाज को शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक स्वास्थ्य के मार्ग पर अग्रसर करता है ।

इकाई 1-मिट्टी चिकित्सा, सूर्य चिकित्सा

इकाई 2- जल चिकित्सा (हाइड्रोथेरेपी)

इकाई 3- मसाज के विविध प्रकार एवं प्रयोग

इकाई 4- प्राकृतिक चिकित्सा (नैचुरोपैथी)

इकाई 5- वैकल्पिक चिकित्सा एवं षट्कर्म

#### पाठ्यपुस्तकम्-

समग्र उपचार, प्रकाशन- द्विव्य प्रकाशन, द्विव्य योग मन्दिर ट्रस्ट, हरिद्वार।

**अथवा**  
**संस्कृतलेखनकौशलम्**  
**Code- BVSASE-205 (2)**  
**Credit-3**

**इकाई 1- वैदिका: शास्त्रीयाश्च निबन्धा:- 8 घण्टे**

- वेदानां महत्त्वम्
- वेदाङ्गानां महत्त्वम्
- मुखं व्याकरणं स्मृतम्
- उपनिषदां महत्त्वम्
- गीता सुगीता कर्तव्या
- रम्या रामायणी कथा
- भारतं पञ्चमो वेदः
- पुराणं पञ्चलक्षणम्
- पुराणानां महत्त्वम्
- विद्यावतां भागवते परीक्षा

**इकाई 2- दार्शनिका निबन्धा: -8 घण्टे**

- भारतीयदर्शनानां महत्त्वं वैशिष्ट्यं च
- कर्मण्येवाधिकारस्ते
- नास्ति सांख्यसमं ज्ञानम्
- एकं सांख्यं च योगं च यः पश्यति स पश्यति
- नास्ति योगसमं बलम्
- ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या

**शैक्षणिका: निबन्धा:**

- संस्कृतभाषाया महत्त्वम्
- संस्कृतस्य रक्षार्थं प्रचारार्थं चोपायाः
- आचार्यदेवो भव

**इकाई 3- सांस्कृतिका निबन्धा: -8 घण्टे**

- वैदिकी संस्कृतिः
- भारतीया संस्कृतिः
- संस्कृतिः संस्कृताश्रया
- भारतीयसंस्कृतौ नारीणां स्थानम्
- नहि सत्यात् परो धर्मः

- अहिंसा परमो धर्मः
- यतो धर्मस्ततो जयः
- परोपकाराय सतां विभूतयः
- आचारः परमो धर्मः

**इकाई 4- (क) सामाजिका निबन्धा: -8 घण्टे**

- महर्षिदयानन्दः
  - स्त्रीशिक्षाया आवश्यकता-उपयोगिता च
  - चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः
- (ख) प्रकीर्णा निबन्धा:**
- ज्वलितं न हिरण्यरेतसं चयमास्कन्दति भस्मनां जनः
  - धर्माथकाममोक्षणाम् आरोग्यं मूलमुत्तमम्
  - उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मीः
  - उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत्
  - योगः कर्मसु कौशलम्
  - गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वयः
  - विद्याधनं सर्वधनप्रधानम्
  - सत्सङ्गतिः कथय किं न करोति पुंसाम्

**इकाई 5- आधुनिका निबन्धा: -8 घण्टे**

- विज्ञानस्योपलब्धयो दोषाश्च
- पर्यावरण-संरक्षणम्
- वर्तमान-युगे-संगणकस्य (कम्प्यूटरस्य) उपयोगिता
- संस्कृतं संगणकं च
- आतंकवादः समस्या, तत् समाधानं च
- दूरदर्शनस्योपयोगिता प्रभावश्च
- आधुनिकी शिक्षापद्धतिः, गुणदोषविमर्शः
- वर्तमानयुगे नारीणां स्थितिः
- महिलानां सशक्तिकरणम् आरक्षणं च
- भ्रष्टाचारः समस्या समाधानं च

**पाठ्यपुस्तकम्-** संस्कृतनिबन्धशतकम्, लेखक- डॉ कपिल द्विवेदी, प्रकाशन- विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी ।



अथवा  
सङ्गीतम्-2  
**Code- BVSASE-205 (3)**  
**Credit-3**

1. Notations of your compositions. (16 hours)
2. Biography & life sketch of Famous Gurus, Dancers, Mridang players
3. Technical terms used in your dance style.
4. Tala, Raga, composer, story of your own composition with special reference to Rasa, Bhava, Anubhava, Vyabhichari etc.
5. Short notes on Nayak-Nayika with reference to your compositions.

**अथवा**  
**गोविज्ञानम्**  
**Code- BVSASE-205 (4)**  
**Credit-3**

- इकाई 1-** गो शब्द का अर्थ एवं पर्यावाची शब्द, गोवंश परिचय (नस्लें), देशी गोवंश तथा विदेशी गायों में अन्तर, गो का अन्य पशुओं से वैशिष्ट्य, गो माहात्म्य के विषय में महापुरुषों के विचार, प्राचीन काल में गो संवर्धन का स्वरूप तथा वर्तमान काल में गोसंवर्धन का स्वरूप, भारत के विभिन्न क्षेत्रों में पायी जाने वाली गो नस्लें एवं पालन।
- इकाई 2-** संस्कृत वाङ्मय में गो का महत्त्व, वेदों के अनुसार गो महिमा, स्मृतियों, उपनिषदों आयुर्वेद ग्रन्थों, पुराणों, महाभारत, रामायण एवं अन्य ग्रन्थों के अनुसार गो महिमा।
- इकाई 3-** विभिन्न आयुर्वेद ग्रन्थों के अनुसार- पञ्चगव्य का औषधीय प्रभाव एवं आरोग्यता-
1. गोदुग्ध
  2. गोदधि
  3. गोनवनीत तथा गोघृत
  4. गोमूत्र
  5. गोमय (गोबर), गोवर्ण एवं गो आयु का वैशिष्ट्य।
  6. गोवंश सुधार की आवश्यकता, दुधारू तथा स्वस्थ गोवंश।
- इकाई 4-** गो मेध यज्ञ का वास्तविक स्वरूप, गोदान की परम्परा एवं गोपूजा का माहात्म्य, गो हत्या एवं मांस सेवन का निषेध, वर्तमान परिपेक्ष्य में गोसंवर्धन की आवश्यकता, लाभ एवं इसकी वैज्ञानिकता, गोसेवा द्वारा विभिन्न रोगों से मुक्ति पाप का क्षय पुण्य की प्राप्ति, उन्नत कृषि हेतु गो संरक्षण, जैविक खाद कीटनाशक के रूप में गोमूत्र का प्रयोग।
- इकाई 5-** सुन्दर समृद्ध आर्थिक आत्मनिर्भर व्यक्ति तथा समाज के लिये गो का महत्त्व, भारत वर्ष की प्रमुख गोशालाएं एवं गोधन, वर्तमानकाल में गोपालन की समस्या एवं समाधान, उन्नत बैल अथवा नन्दी का सदुपयोग, गो संवर्धन में योगर्षि स्वामी रामदेव जी महाराज (पतञ्जलि योगपीठ) का योगदान, गोशालाओं की आत्मनिर्भरता के लिये गोमूत्र संयन्त्र तथा गोमय (गोमय) से बनी समिधा एवं अन्य वस्तुओं का निर्माण, गो आधारित प्रेरक कथाएं एवं सूक्तियां ।

बी.ए. ऑनर्स-संस्कृतव्याकरणम्

द्वितीयसत्रम्

षष्ठपत्रम्-दर्शनस्मरणम्

Code- BVSAVA-206 (1)  
(Credit-3)

पूर्णाङ्काः-100

बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75

आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25

समयः-होरात्रयम्

इकाई 1-योगदर्शनम्	05 घण्टे
इकाई 2- सांख्यदर्शनम्	10 घण्टे
इकाई 3- न्यायदर्शनम्	15 घण्टे
इकाई 4- वैशेषिकदर्शनम्	10 घण्टे
इकाई 5- वेदान्त-मीमांसा दर्शनम्	10 घण्टे

अथवा

उपनिषद्-स्मरणम्

Code- BVSAVA-206 (2)  
(Credit-3)

इकाई 1- ईशोपनिषद्, केनोपनिषद्, कठोपनिषद्	10 घण्टे
इकाई 2- प्रश्नोपनिषद्, मुण्डकोपनिषद्	10 घण्टे
इकाई 3- माण्डूक्योपनिषद्, ऐतरेयोपनिषद्	10 घण्टे
इकाई 4- तैत्तिरीयोपनिषद्	10 घण्टे
इकाई 5- श्वेताश्वतरोपनिषद्	10 घण्टे

**अथवा**  
**योगविज्ञानम् ( प्रयोगात्मकम् )**  
**Code- BVSAVA-206 (3)**  
**(Credit-3)**

**Objectives:** Following the completion of the course, students shall be able to:

- Understand the benefits, procedure and contraindications of all practices.
- Demonstrate each practice with confidence and skill.
- Explain the procedure and subtle points involved.

**Unit I: Eight Baithak by Yogrishi Swami Ramdev ji (12 Hours)**  
Ardhbaithak, Purnabaithak, Rammurtibaithak, Pahalwani baithak-1, Pahalwanibaithak-II,  
Hanuman baithak -1, Hanuman baithak-11,

**Unit II: Twelve Dand by Yogrishi Swami Ramdev ji (15 Hours)**  
Simple Dand, RammurtiDand, VakshvikasakDand, Hanuman Dand, VrishchikDand-I,  
VrishchikDand-II, Parshvadand, Chakradand, Palatdand, Sherdand, Sarpdand, Mishradand (mixed  
Dand)

**Unit III: Surya Namaskara & Yogasana (Supine lying postures) (18 Hours)**  
Suryanamaskar, Naukasana, Pavanamuktasana, Utthana-padasana, Padavrittasana, Chakrikasana,  
Chakkichalana, ArdhaHalasana, Halasana, Setubandhasana, Sarvangasana, Matsyasana, Chakrasana,  
Shavasana.

**Unit IV: Pranayama (23 Hours)**  
NadiShodhana (Technique 1: Same Nostril Breathing), NadiShodhana (Technique 2: Alternate  
Nostril Breathing), NadiShodhana (Technique 3: Alternate Nostril Breathing + Antarkumbhak);  
NadiShodhana (Puraka + AntarKumbhak + Rechaka + BahyaKumbhak) (1:4:2:2);

**Unit V: Mudra & Shatkarmas (Only One kriya) (22 Hours)**  
Hasta Mudra: Chin, Jnana, Hridaya, Bhairav, Yoni, Pran, Apan, Apanvayu, Shankh, Kamajayi,  
Shatkriya, Neti (Jalneti, Rubber Neti)  
**Continuous Evaluation by the Teachers**

**TEXT BOOKS**

1. Balkrishna Acharya: (2015), DainikYogabhyasakram, DivyaPrakashan, Haridwar.
2. Randev Y.S. 2015: Dand-baithak, DivyaPrakashan, Haridwar
3. Saraswati S. S. (2006). Asana Pranayama and Mudra Bandha, "Yoga Publication Trust." Munger,  
**BihContinuous Evaluation by the Teachers**

**बी.ए. ऑनर्स-संस्कृतव्याकरणम्**  
**तृतीयसत्रम्**  
**प्रथमपत्रम्- संस्कृतव्याकरणम् ( ५ )**  
**Code- BVSAMJ-301**

पूर्णाङ्कः-100  
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्कः-75  
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्कः-25  
समयः-होरात्रयम्

**उद्देश्य :**

- सनन्त, नामधातु, यङन्त, णिजन्त एवं अयादि धातुओं का बोध कराके संस्कृत पठन-पाठन में समर्थ बनाना।
- आख्यात में प्रयुक्त होने वाले विकरण प्रत्यय तथा धातु से प्रयुक्त कृत् एवं कृत्य प्रत्ययों का बोध एवं प्रयोग सिखाना।
- कर्म एवं सुबन्त उपपद रहते धातुओं से प्रत्यय विधान तथा भूत एवं वर्तमान काल में निर्दिष्ट प्रत्ययों का बोध करा शब्द निर्माण प्रक्रिया से अवगत कराना।

**परिणामः**

- वैदिक वाङ्मय में प्रयुक्त सनन्त, यङन्त, णिजन्त तथा नामधातु आदि के माध्यम से ज्ञानार्जन करके समाज में शास्त्र सम्मत दृष्टि प्रदान करता है जिसके फलस्वरूप समाज में कर्तव्याकर्तव्य के बोध में निर्भान्त दृष्टि मिलती है।
- तिङन्त में प्रयुक्त होने वाले विकरणों को बताने में समर्थ होते हैं तथा आख्यात को देखकर विकरण निर्धारण में भी समर्थ हो जाते हैं और कृत तथा कृत्य प्रत्यय निष्ठ शब्दों के प्रयोग से संस्कृत तथा संस्कृति के प्रति लोगों को आकृष्ट करता है जिससे समाज संस्कारवान् व सम्पन्न होता है।
- कृत्य व कृत् प्रत्ययों के ज्ञान से वाक्य निर्माण में पटुता आती है और उपपद धातुओं तिङन्त तथा लकारों के सम्यक् तथा सम्पूर्ण अर्थबोध से शास्त्र एवं साहित्य के माध्यम से लोगों के मध्य में जागरुकता तथा समरसता का पथ प्रशस्त करता है।
- सम्भाषण में कृत्य व कृत् प्रत्ययों का प्रयोग कर सम्भाषण को उत्कृष्ट बनाते हैं।

**काशिकावृत्तिः ( तृतीयाध्यायस्य प्रथमद्वितीयपादौ )-**

७०

- इकाई-1** प्रत्ययः (3.1.1)- कुषिरजोः प्राचांश्यन्..... पर्यन्तम् (3.1.90) १४  
प्रत्ययः, परश्च, आद्युदात्तश्च इत्यादीनि सूत्राणि ।
- इकाई-2** धातोः .....(3.1.91)- आशिषि च पर्यन्तम् (3.1.150) १४  
धातोः, तत्रोपपदं सप्तमीस्थम्, कृदतिङ् इत्यादीनि सूत्राणि ।
- इकाई-3** कर्मण्यण् (3.2.1)- आत्माने खश्च... पर्यन्तम् (3.2.83) १४  
कर्मण्यण्, ह्रावामश्च, आतोऽनुपसर्गे कः इत्यादीनि सूत्राणि ।
- इकाई-4** भूते (3.2.84)- पूङ्यजो शानन् (3.2.128) १४  
भूते, करणे यजः, कर्मणि हनः, इत्यादीनि सूत्राणि ।
- इकाई-5** ताच्छील्यवयो.....(3.2.129)- मतिबुद्धिपूजार्थेभ्यश्च (3.2.188) १४  
ताच्छील्यवयोवचनशक्तिषु चानश्, इङ्धार्यो शत्रुकृच्छ्रिणि इत्यादीनि सूत्राणि ।

**पाठ्यपुस्तकम्-**

- काशिकावृत्ति- श्रीवामनजयादित्यविरचिता  
प्रकाशक- रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा।  
श्रीमद्दयानन्दवेदार्थमहाविद्यालयन्यास, 119 गौतमनगर, नई दिल्ली-49।  
ताराबुक एजेन्सी, वाराणसी।

**सहायकग्रन्थ -**

- वार्तिकप्रकाश- आचार्य आनन्दप्रकाश, प्रकाशक- चौखम्भा संस्कृत संस्थान वाराणसी।
- व्याकरणकारिकाप्रकाश- पं. सुदर्शनदेवाचार्य, प्रकाशक- हरियाण साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर हरियाणा।

**बी.ए. ऑनर्स-संस्कृतव्याकरणम्**  
**तृतीयसत्रम्**  
**द्वितीयपत्रम्- संस्कृतव्याकरणम् ( ६ )**  
**Code- BVSAMJ-302**

पूर्णाङ्काः-100  
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75  
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25  
समयः-होरात्रयम्

**उद्देश्य :**

- उणादि तथा कर्ताभिन्नकारक संज्ञा भाव में विहित प्रत्ययों एवं खलर्थ प्रत्ययों का बोध ।
- कालातिदेश में विहित प्रत्यय लिङ् लोट् एवं तुमुन् आदि प्रत्ययों के प्रयोग कराना।

**परिणामः**

- उणादि शब्दों की सिद्धि एवं प्रकृति प्रत्यय विभाग को बताने में प्रवीणता आती है औणदिक शब्दप्रक्रिया जन्य शब्दों के ज्ञान से लौकिक तथा वैदिक शब्दों के शाश्वत शब्दार्थ सम्बन्ध को स्थिरता प्रदान करता है जिसके फलस्वरूप समाज में विकृतियों का प्रादुर्भाव नहीं होता है।
- कृत् प्रत्यय के प्रयोग से वाक्य प्रयोग में प्रवीणता आती है व अन्य ग्रन्थों में पहचानने में समर्थ होते हैं।
- किस कारक में कौन सा प्रत्यय होता है इसका परिचय देने में पारंगत होते हैं प्रत्ययों के अर्थ काल आदि के सम्यक् ज्ञान से लुप्त प्रायः शास्त्रों का जीर्णोद्धार करना व मानवता के लिए हितकारी सिद्धान्त व तत्वों की पुनर्स्थापना करता है।
- अव्युत्पन्न शब्दों के बोधन में समर्थ होते हैं एवं शब्दों के वाक्यगत अर्थ तथा वाक्य निर्माणशैली के बोध से शब्दार्थ शक्ति तथा वाक्यार्थ शक्ति का विशिष्ट ज्ञान आता है जिससे लोक में शास्त्र सम्बन्धी दुविधा को नष्ट करके शास्त्रों की यथार्थता को प्रकाशित करता है।

**काशिकावृत्तिः (तृतीयाध्यायस्य तृतीयपादः)**

७०

- इकाई-1** उणादयो बहुलम् (3.3.1)- कर्मण्यधिकरणे च पर्यन्तम् (3.3.93) १४  
उणादयो बहुलम्, भूतेऽपि दृश्यन्ते, भविष्यति गम्यादयः इत्यादीनि सूत्राणि ।
- इकाई-2** स्त्रियां क्तिन् (3.3.94)- आशंसावचने लिङ् (3.3.134) १४  
स्त्रियां क्तिन् , श्थागापापचो भावे, मन्त्रे वृषेषपचमनविदभूवीरा उदात्तः इत्यादीनि सूत्राणि ।
- इकाई-3** नानद्यतनवत्.....(3.3.135)- स्मोत्तरे लङ् च... पर्यन्तम् (3.3.176) १४  
नानद्यतनवत् क्रियाप्रबन्धसामीप्ययोः, भविष्यति मर्यादावचनेऽवरस्मिन् इत्यादीनि सूत्राणि ।
- इकाई-4 उणादिकोषः** (1-3 पाद) १४  
कृवापाजिमिस्वदिसाध्यशूभ्य उण्, छन्दसीणः इत्यादीनि सूत्राणि ।
- इकाई-5 उणादिकोषः** (4-5 पाद) १४  
वातप्रमीः, ऋतन्यज्जिवन्यञ्च्यर्पिमद्य..... इत्यादीनि सूत्राणि ।

**पाठ्यपुस्तकम्-**

- काशिकावृत्ति- श्रीवामनजयादित्यविरचिता  
प्रकाशक- रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा।  
श्रीमद्दयानन्दवेदार्षमहाविद्यालयन्यास, 119 गौतमनगर, नई दिल्ली-49।  
ताराबुक एजेन्सी, वाराणसी।
- उणादिकोषः- श्रीमत्स्वामीदयानन्दसरस्वतीव्याख्यासहितः, प्रकाशक- रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा।

**सहायकग्रन्थ -**

- वार्तिकप्रकाश- आचार्य आनन्दप्रकाश, प्रकाशक- चौखम्भा संस्कृत संस्थान वाराणसी।
- व्याकरणकारिकाप्रकाश- पं. सुदर्शनदेवाचार्य, प्रकाशक- हरियाण साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर हरियाणा।

**बी.ए. ऑनर्स-संस्कृतव्याकरणम्**  
**तृतीयसत्रम्**  
**तृतीयपत्रम्- संस्कृतव्याकरणम् ( ७ )**  
**Code- BVSAMN-303**

पूर्णाङ्कः-100  
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्कः-75  
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्कः-25  
समयः-होरात्रयम्

**उद्देश्य :**

- क्त्वा और णमुल् प्रत्यय विषयक बोध तथा अन्य विधि सूत्रों से अवगत कराना।
- पाणिनीय कृतलिङ्गानुशासनम् ग्रन्थ के द्वारा शब्दों के लिङ्गों का बोध करा संस्कृत संभाषण व लेखन में समर्थ बनाना।
- फिट्सूत्र ग्रन्थ के माध्यम से स्वर विषयक ज्ञान प्रदान करना।

**परिणामः**

- क्त्वा और णमुलादि प्रत्ययों के ज्ञान से वाक्य प्रयोग में कुशल बनते हैं।
- वाक्य संरचना में अति महत्वपूर्ण शब्दों के लिङ्ग का विशिष्ट बोध कराने में समर्थ होते हैं।
- शब्दों की स्वर सिद्धि में पारंगता आती है।
- प्रत्ययों के कारक निर्धारण व बताने में निपुण हो जाते हैं।

**काशिकावृत्तिः (तृतीयाध्यायस्य चतुर्थः पादः)**

७०

**इकाई-1** धातुसम्बन्धे.... (3.4.1)- प्रयाप्तवचने..... पर्यन्तम् (3.4.66) १४

धातुसम्बन्धे प्रत्ययाः, क्रियासमभिहारे लोट् लोटो..... इत्यादीनि सूत्राणि ।

**इकाई-2** कर्तरि कृत् (3.4.67)- छन्दस्युभयथा पर्यन्तम् (3.4.117) १४

कर्तरि कृत् , भव्यगेयप्रवचनीयोपस्थानीय.... इत्यादीनि सूत्राणि ।

**इकाई-3** लिङ्गानुशासनम् (स्त्रीलिङ्गाधिकारः, पुल्लिङ्गाधिकारः) १४

लिङ्गम्, स्त्री, ऋकारान्ता मातृदुहितृस्वसृया..... इत्यादीनि सूत्राणि ।

(क) सूत्रकण्ठस्थीकरणम् (ख) ससूत्रलिङ्गज्ञापनम्

**इकाई-4** लिङ्गानुशासनम् (नपुंसकलिङ्गाधिकारः, विशिष्टलिङ्गाधिकारः) १४

नपुंसकम्, भावे ल्युडन्तः, निष्ठा च इत्यादीनि सूत्राणि ।

(क) सूत्रकण्ठस्थीकरणम् (ख) ससूत्रलिङ्गज्ञापनम्

**इकाई-5** फिट्सूत्राणि १४

फिषोऽन्त उदात्तः, पाटलापालङ्काम्बासागरार्थानाम् इत्यादीनि सूत्राणि ।

(क) सूत्रकण्ठस्थीकरणम् (ख) अर्थोदाहरणे (ग) स्वरज्ञापनम्

**पाठ्यपुस्तकम्-**

- काशिकावृत्ति- श्रीवामनजयादित्यविरचिता  
प्रकाशक- रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा।  
श्रीमद्दयानन्दवेदार्षमहाविद्यालयन्यास, 119 गौतमनगर, नई दिल्ली-49।  
ताराबुक एजेन्सी, वाराणसी।
- लिङ्गानुशासनम्:- पं. सुदर्शनदेवाचार्य, प्रकाशक- हरियाण साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर हरियाणा।
- फिट्सूत्रम्- पं. सुदर्शनदेवाचार्य, प्रकाशक- हरियाण साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर हरियाणा।

**सहायकग्रन्थ -**

- वार्तिकप्रकाश- आचार्य आनन्दप्रकाश, प्रकाशक- चौखम्भा संस्कृत संस्थान वाराणसी।
- व्याकरणकारिकाप्रकाश- पं. सुदर्शनदेवाचार्य, प्रकाशक- हरियाण साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर हरियाणा।

बी.ए. ऑनर्स-संस्कृतव्याकरणम्  
तृतीयसत्रम्  
चतुर्थपत्रम्- स्वर्णकाल का इतिहास  
Code- BVSAID-304 (1)

पूर्णाङ्कः-100  
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्कः-75  
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्कः-25  
समयः-होरात्रयम्

क्रेडिट-2

**Course Objectives-**

The main objective of this paper is to understand historical processes between 3<sup>rd</sup> Century AD and 6<sup>th</sup> Century AD. Though the chronology of the paper starts at 3<sup>rd</sup> Century AD, an initial background is given starting from the post Mauryan period starting with the Gupta and ending with post Gupta scenario,

**Unit I: Political History of Gupta Period**

7 Hours

Origin and development of Gupta Dynasty, Early History of Guptas- Shri Gupt and Ghatotkach, Founder of the great Gupta Dynasty- Chandragupta I, Achievements of Samudragupta, Mighty, Virtuous, Digvijayi and the great Gupta king who presented the concept of Greater India.

**Unit II: Political History of Gupta Period**

7 Hours

Achievements Chandragupta Vikramaditya, Kumargupta and his successor- Skandgupta, Budhgupta and Decline of the Imperial Guptas, Government and functions of the Council of Ministers during the Gupta period, Officials of the Gupta empire.

**Unit III: Religious Status in the Gupta Period**

8 Hours

**Vedic Religion-** Surya, Indra, agni, Varun, Yam, Kubera, Tenacity and Sadhana, Life of Tapovan, Origin of Creation, Method of Yajna. public beliefs and rituals. **Puranic Religions: Shaivism:** Bhakti Tradition of Shavism: Pashupat Tradition, Kapalika Tradition, Kalmukh Tradition, Skand, Ganesh and Kartikey, Bhakti Tradition, **Vaishnavism:** Panchratra, Bhagavat, Krishna and doctrine of embodiment: Bhagavan Vishnu ke das Avatar, **Shaktism:** Trideviyan- Historical sources of Lakshmi, Durga and Saraswati.

**Unit IV: Literary and Creator**

8 Hours

Development of Sanskrit literature - Fine literature like Avadan, Jataka Mala, Prayag Prashasti composed by Harishena, great poet Kalidas's texts, authors like Bharavi, Bhatti, Shudrak, Visakhadatta, Arthashastra, Dharmashastra, Buddhist literature and Jain literature. Development of Prakrit literature, Apabhramsa literature and Tamil literature.

**Course Outcome:**

The paper ensures that the students learn the changes in political, social, economic and cultural scenario happening during this chronological span. It will also teach them how to study sources to the changing historical processes.

**Recommended Readings:**

Pandey, V.C. Prachin Bharat ka Rajnitik Tatha Sanskritik Itihas, 2 Parts, Central Book Dipo Allahabad,  
Sharma, L.P.: History of Ancient India,  
Raychoudhury, H.C., Prācīn Bhārata Kā Rājanītika Itihāsa (Hindi), Allahabad,  
Singh, U., A History of Ancient and Early Medieval India, From The Stone Age To The 12th Century, Delhi 2016  
Basham A. L. The Wonder that was India, London



**अथवा**  
**सामाजिकविज्ञान-3**  
**Code: BVSaid-304 (2)**

**उद्देश्य:**

- सामाजिक परिवर्तन से अवगत कराना।
- सामाजिक परिवर्तन के सिद्धान्तों का बोध कराना।
- विकास के प्रारूप से अवगत कराना।
- भारत के संदर्भ में सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रियाओं से परिचित कराना।

**परिणाम-**

- सामाजिक परिवर्तन के बोध से सामाजिक विषमताओं को दूर करने में सक्षम हो जाता है।
- सामाजिक परिवर्तन के सिद्धान्तों के बोध से सामाज के विकासपूर्वक अन्याय एवं अधर्म के विरुद्ध संघर्ष करने की योग्यता जागृत हो जाती है।
- विकास के प्रारूपों के अध्ययन से पूंजीवादी, समाजवादी व गांधीवादी विचारधाराओं के तुलनात्मक अनुशीलन से राष्ट्र में एकत्व, सह-अस्तित्व व विश्वबन्धुत्व की स्थापना करने में तत्पर हो जाता है।
- भारत के सन्दर्भ में सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रियाओं के ज्ञान से अपनी संस्कृति के प्रति दृढ़ आस्था व विश्वासपूर्वक पुरातन व सनातन संस्कृति का अनुगामी बनकर विश्वकल्याण में प्रवृत्त हो जाता है।

**सामाजिक परिवर्तन और विकास**

परिवर्तन प्रकृति का नियम है और प्रत्येक समाज परिवर्तन के अधीन है। सामाजिक परिवर्तन हमेशा समाजशास्त्रीय अध्ययन का एक केंद्रीय सरोकार रहा है। परिवर्तन के भिन्न रूप होते हैं। परिवर्तन की अपनी पद्धति होती है जिसे विभिन्न सिद्धांतों द्वारा वर्णित किया जाता है। परिवर्तन अक्सर विभिन्न कारकों से प्रेरित होता है। यह प्रश्न-पत्र छात्र को ऐसी प्रक्रिया, सिद्धांतों और कारकों के बारे में कुछ विचार प्रदान करने के लिए निरूपित किया गया है।

**इकाई प्रथम- सामाजिक परिवर्तन**

- |                                      |  |
|--------------------------------------|--|
| 1.1 अर्थ और प्रकृति                  | 1.2 सामाजिक विकास और सामाजिक प्रगति: अर्थ और विशेषताएं |
| 1.3 सामाजिक विकास: अर्थ और विशेषताएं | 1.4 परिवर्तन के कारक: सांस्कृतिक, तकनीकी, जनसांख्यिकीय |

**इकाई द्वितीय- सामाजिक परिवर्तन के सिद्धांत**

- |                        |                           |
|------------------------|---------------------------|
| 2.1 विकासवादी सिद्धांत | 2.2 प्रकार्यवादी सिद्धांत |
| 2.3 संघर्ष सिद्धांत    | 2.4 चक्रीय सिद्धांत       |

**इकाई तृतीय- विकास के प्रारूप**

- |                             |               |
|-----------------------------|---------------|
| 3.1 सामाजिक विकास के संकेतक | 3.2 पूंजीवादी |
| 3.3 समाजवादी                | 3.4 गांधीवादी |

**इकाई चतुर्थ- भारत के सन्दर्भ में सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रियाएँ**

- |                 |                      |
|-----------------|----------------------|
| 4.1 संस्कृतिकरण | 4.2 पश्चिमीकरण       |
| 4.3 आधुनिकीकरण  | 4.4 धर्मनिरपेक्षीकरण |

**इकाई पञ्चम- प्रयोगात्मक गतिविधियाँ**

**पाठ्य पुस्तकें-** 1. स्टीवन, वागो, सोशल चेंज, पियर्सन अप्रेंटिस हॉल, 2003 5वां रेव. एड।

**संदर्भ ग्रन्थ-**1. जयराम कंसल, सोशल चेंज एंड डेवलपमेंट, विजडम प्रेस (आई.एस.बी.एन) (सी.बी.सी.एस), 2004

2. सिंह, वाई., भारतीय परंपरा का आधुनिकीकरण: सामाजिक परिवर्तन का एक व्यवस्थित अध्ययन, फरीदाबाद: थॉम्पसन प्रेस लिमिटेड, 1973

अथवा  
संस्कृतसाहित्यम्-3  
Code: BVSAID-304 (3)

(1) गद्यम्- अर्थशास्त्रान्तर्गतं विनयाधिकरणम्, व्यसनाधिकरणम्-

(क) गद्यसाहित्योद्भवपरिचयौ/ गद्यकृतपरिचयः

(ख) शब्दार्थः, शब्दालंकारः वाक्यान्वयः, अर्थालंकार/ व्यसनविषयकप्रश्नाः

(2) नाटकम्- भासविरचितं बालचरितम्

(क) श्लोक व्याख्या/ गद्य व्याख्या

(ख) पात्रपरिचयः/ कविपरिचयः

(ग) चरित्रचित्रणम्/ अंकसारः

(3) पंच छन्दांसि-

अनुष्टुप, आर्या, इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, उपजाति, वंशस्थ, मालिनी, शालिनी, शार्दूलविक्रीडित, पंचचामर, शिखरिणी, भुजंगप्रयात।

सहायकग्रन्थाः-

- कौटलीय अर्थशास्त्र- उदयवीर शास्त्री (व्याख्याकार)  
मेहरचन्द्र लक्ष्मणदास पब्लिकेशन नई दिल्ली
- भासनाटकचक्रम्- मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि. देहली।
- वृत्तरत्नाकर- चौखम्भा संस्कृत संस्थान वाराणसी।

# बी.ए. ऑनर्स-संस्कृतव्याकरणम्

## तृतीयसत्रम्

पंचमपत्रम् - ENGLISH COMMUNICATION-II

Code- BVSAAE-305

पूर्णाङ्कः:-100

बाह्यमूल्याङ्कनाङ्कः:-75

आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्कः:-25

समयः-होरात्रयम्

### Objectives:

- Unit1-Communicate easily with and enhance the ability to understand native speakers
- Unit 2- Remove personal barriers and enhance confidence in a group setting and in work places
- Unit3-Help translate L2 from L1 in a more efficient manner  
(L1 is the mother tongue & L2 is the Official Language – here English)
- Unit4 –Enhance formal and business writing skills

### Course Specific Outcomes

- Produce words with right pronunciation
- Develop vocabulary and improve the accuracy in grammar
- Develop the confidence to speak in public
- Demonstrate positive group communication exchanges.
- Ability to speak and write clearly in standard, academic English

**Method of Teaching & Assessment-**Videos, Audio clippings, discussion, written and oral exercises

**Unit-1:-** Different types of Salutations,  
Differences between formal and informal speech, between standard and Colloquial language

**Unit-2:** Verbal and Non-verbal Communication

- Personal–Social–Business
- Inter-personal and Group Communication
- Professional Communication

**Unit3-** Reading Comprehension

- Analysis and Interpretation
- Translation (from Indian Languages to English and vice-versa)
- Loud Reading, Drilling for pronunciation and fluency
- Listening Comprehension

**Unit4-** Writing Skills

- Report Writing
- Paraphrasing
- Professional Writing
- Argumentative Essays

### Text books:

- English Grammar in Use, 4<sup>th</sup> Edition, Cambridge by Raymond Murphy
- Oxford Handbook for the Foundation Programme by Tim Raine & James Dawson & Stephan Sanders & Simon Eccles – eBook

### Suggested Sources:

- [learnenglish.britishcouncil.org](http://learnenglish.britishcouncil.org)
- [learnenglish.britishcouncil.org/general-english/magazine-zone](http://learnenglish.britishcouncil.org/general-english/magazine-zone)
- British Council e-Books for free - [pdfdrive.com/british-council-books.html](http://pdfdrive.com/british-council-books.html)
- Check Your Vocabulary for English for the IELTS Examination – eBook

**बी.ए. ऑनर्स-संस्कृतव्याकरणम्**  
**तृतीयसत्रम्**  
**पंचमपत्रम् - सस्वरवेदपाठः**  
**Code- BVSASE-306 (1)**

पूर्णाङ्काः:-100  
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः:-75  
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः:-25  
समयः-होरात्रयम्

**उद्देश्य-**

- वेदों की रक्षा करना।
- वेद, वेदों का विषय और वेदों के ऋषियों से लाभान्वित् होंगे।
- वेद पाठ के हर प्रकार के पाठों से अवगत करना।
- अक्षरों(वर्णों) उच्चारण का सम्यक बोध करना।

**ईकाई-१**

- i. वैदिक वाङ्मय परिचय
- ii. वेदों के ऋषियों, छन्द एवं देवताओं के स्वरूप का परिचय।
- iii. वेदों के मुख्य विषयों का परिचय।
- iv. वेद पाठ के आठ प्रकार के पाठों (जटा, माला, शिखा, रेखा, ध्वजा, दण्ड, रथ, घन)से अवगत करना।
- v. मुख्य सूक्तों का परिचय (अग्नि सूक्त, वायु सूक्त, वागाम्भृणी, बृहस्पति, स्वस्तिवाचन, पुरुषसूक्त, नासदीयसूक्त, शान्तिकरण श्रद्धा, संगठन एवं दिनचर्या मन्त्रों का सस्वर उच्चारण)

**ईकाई-२**

- i. ऋग्वेदीय अग्नि सूक्त, वायु सूक्त, वागाम्भृणी सूक्त कण्ठपाठ अभ्यास एवं अर्थ सहित व्याख्या।
- ii. पुराने पाठ का आवृत्ति।

**ईकाई-३**

- i. पुरुष सूक्त नासदीय सूक्त, बृहस्पति सूक्त कण्ठपाठ अभ्यास एवं अर्थ सहित व्याख्या।
- ii. पुराने पाठ का आवृत्ति।

**ईकाई-४**

- i. कृष्ण युजर्वेदीय तैत्तिरीय आरण्यक मंत्रपुष्पम् का परिचय।
- ii. पुराने पाठ का आवृत्ति।
- iii. मन्त्रपुष्पम् का पाठ एवं कण्ठस्थ अर्थ सहित व्याख्या।
- iv. स्वस्तिवाचन शान्तिकरण एवं दिनचर्यामंत्रों का सस्वर उच्चारण।
- v. संगठन सूक्त के प्रतिदिन एक-एक मंत्र का अर्थ बोध।

**परिणाम-**

- वेद पाठ के प्रकारों (पाठों) का बोध होगा।
- अग्नि, वायु, सस्वर, पाठ एवं अर्थ बोध।
- वैदिक वाङ्मय के विषय में ज्ञान प्राप्त करेंगे।
- एकाग्रता बढ़ती है, सात्विक हारमोन्स पैदा होने से अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञान का एवं आनन्दमय अस्तित्व पुष्ट एवं प्रसन्न होता है।

**निर्धारित पाठ्यपुस्तक-** वैदिक सूक्त मञ्जरी, मुद्रक-ऋषि ऑफसेट प्रिन्टर्स, ज्वालापुर हरिद्वार।

अथवा  
संगीतम्  
Code: BVSASE-306 (2)

(75+25=100)

क्रेडिट-3

**Objective-**

1. Understand the fundamental concepts of music, including its origins, methods, types, and forms
2. Explore the nature of sound, its origin, and the elements of music such as notes, pitches, and rhythm. Learn about concepts like Shruti, Swar, Andolan, Laya, and Taal, including their types and characteristics. Gain knowledge of basic musical notes, scales, and octaves. Practice to Sing five Bhajans.
3. Understand the concept of Raag, its rules, classifications, and basic characteristics. Identify the ten Thaats and learn about their significance in Raag classification. Recognize three Raags belonging to each of the ten Thaats.
4. Study the lives and contributions of prominent musicians.

**Unit I-** Basic Knowledge & Definition of Music its origin, its methods its types, its forms.

**Unit II-** Sound, Origin of Sound, Nada, Types of Nada, Shruti & its Names in Order, Swar, Types of Swar, Andolan, Types of Andolan and Knowledge of 7 Basic Notes & 5 vikrit notes, Saptak, Types of Saptak. Definition about Laya, Types of Laya, Sum, Tali, khaali. Knowledge & Demonstrate Some Taal's Such As Teentaal, Bhajni Taal, kehwa, Dadra on Hand, Relation Between Music & Yog, Practices of Five Bhajan

**Unit III-** Brief Definition about Raag, Rules of Raag, Jaati of Raag & Knowledge of 10 That its basic speciality, Names of Three Raag Belongs to ten different Thaats.

**Unit IV-** Biography of Musicians-Tansen, Pandit Vishnu Narayan Bhatkhande, Lata Mangeshkar.

**Outcomes-**

1. Students will know what music is, where it comes from, and the different types it can have.
2. Students will understand how sound works and learn about notes, pitches, and how they change in music. They will learn about concepts like Shruti, Swar, Andolan, Laya, and Taal, including their types and characteristics. Students will acquire knowledge of basic musical notes, scales, and octaves, and practice singing five Bhajans.
3. Students will learn about Raag, its rules, and different types, helping them appreciate Indian classical music better.
4. Students will discover the lives of famous musician and understand their importance in music history.

**Recommended Books:-**

1. Sangeet Rachna Ratnakar Part – 1- Rajkishor Prasad Sinha (Author)
2. Raag parichaya Part – 1 to 4 – Harishchandra Srivastava (Author)
3. Sangeet Prasnottar Part – 1
4. Taal Parichaya – All parts – Acharya Girish Chandra Shrivastava (Author)
5. Adarsh Table Prashnotari Part – 1 – Dr. Rubi Shrivastava
6. Sangeet Praveshika – Acharya Girish Chandra Shrivastava (Author)
7. Kramik Pushtak Mallika Part – All Parts – V.N. Bhatkhande
8. Bhartiya Sangeet Itihas – Umesh & Jaydev Joshi
9. Sangeet Vadya - Ragmani

**बी.ए. ऑनर्स-संस्कृतव्याकरणम्**  
**चतुर्थसत्रम्**  
**प्रथमपत्रम्- संस्कृतव्याकरणम् ( ८ )**  
**Code- BVSAMJ-401**

पूर्णाङ्काः-100  
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75  
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25  
समयः-होरात्रयम्

उद्देश्य :

- स्वादि एवं तद्धित प्रत्ययों की प्रकृति तथा स्त्रीप्रत्ययों का बोध ।
- तद्धित के अधिकार में अपत्यार्थ, चातुरार्थक, शौषिकार्थक तथा अन्य प्रत्ययों का बोध ।

परिणामः

- तद्धित प्रत्यय व उनकी प्रकृति को भिन्न-भिन्न पहचानने में दक्ष होते हैं।
- तद्धितान्त प्रत्ययों के प्रयोग से विशिष्ट सम्भाषण करने में समर्थ होते हैं।
- स्त्री प्रत्ययों के ज्ञान से लिंगों को पहचानने में निपुणता आती है।

**काशिकावृत्तिः (चतुर्थोध्यायः)-**

७०

**इकाई-1** ड्याप्रातिपादिकात् (4.1.1)- आवट्याच्च पर्यन्तम् (4.1.75) १४

ड्याप्रातिपादिकात्, स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्..... इत्यादीनि सूत्राणि ।

**इकाई-2** तद्धिताः (4.1.76)- न प्राच्यभर्गादियौधेयादिभ्यः (4.1.178) १४

तद्धिताः, यूनस्तिः अणिजोरनार्षयोर्गुरुपोत्तमयोः ष्यङ् गोत्रे इत्यादीनि सूत्राणि ।

**इकाई-3** तेन रक्तं रागात् (4.2.1)- कृकण पर्णाद् भारद्वाजे (4.2.145) १४

तेन रक्तं रागात्, लाक्षारोचनाट् ठक्, नक्षत्रेण युक्तः कालः इत्यादीनि सूत्राणि ।

**इकाई-4** युष्मदस्मदोरन्यतरस्यां.....(4.3.1)-कंशीयपरशव्य.....(4.3.168) १४

युष्मदस्मदोरन्यतरस्यां खञ् च, तस्मिन्नणि च युष्माकास्माकौ इत्यादीनि सूत्राणि ।

**इकाई-5** प्राग्वहतेष्टक् (4.4.1)- भावे च (4.4.144) १४

प्राग्वहतेष्टक्, तेन दीव्यति खनति जयति जितम्, इत्यादीनि सूत्राणि ।

**पाठ्यपुस्तकम्-**

- काशिकावृत्ति- श्रीवामनजयादित्यविरचिता  
प्रकाशक- रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा।  
श्रीमद्दयानन्दवेदार्थमहाविद्यालयन्यास, 119 गौतमनगर, नई दिल्ली-49।  
ताराबुक एजेन्सी, वाराणसी।

**सहायकग्रन्थ -**

- वार्त्तिकप्रकाश- आचार्य आनन्दप्रकाश, प्रकाशक- चौखम्भा संस्कृत संस्थान वाराणसी।
- व्याकरणकारिकाप्रकाश- पं. सुदर्शनदेवाचार्य, प्रकाशक- हरियाण साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर हरियाणा।

बी.ए. ऑनर्स-संस्कृतव्याकरणम्  
चतुर्थसत्रम्

द्वितीयपत्रम् - संस्कृतव्याकरणम् ( ९ )

Code- BVSAMJ-402

पूर्णाङ्कः-100

बाह्यमूल्याङ्कनाङ्कः-75

आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्कः-25

समयः-होरात्रयम्

उद्देश्य :

- तद्धित के अधिकार में भाव एवं कर्म में विहित त्वतल् आदि प्रत्ययों का बोध कराना ।
- संख्या वाचियों से पूरण अर्थ में विहित, मतुप् अर्थों में विहित तथा अन्य अर्थों में विहित प्रत्ययों का बोध कराना ।
- विभक्ति संज्ञक, आतिशायिक, स्वार्थिक, समासान्त तथा अन्य अर्थों में विहित प्रत्ययों का बोध कराना ।

परिणामः

- भाषा में भाव प्रत्ययों का प्रयोग कर शब्दों की निष्पत्ति करके उनका प्रयोग करने में समर्थ हो जाते हैं।
- संख्यावाची और मतुबादि अर्थों में विहित प्रत्ययों का बोध पूर्वक प्रयोग में समर्थ होते हैं।
- अतिशायिक प्रत्ययों के साथ वाक्य प्रयोग में प्रवीणता प्राप्त कर एक उच्चस्तरीय संस्कृत लेखन में समर्थ हो जाते हैं।
- साहित्य में प्रयुक्त तद्धितान्तों को पहचानकर तद्धितान्तों के सही अर्थों की संगति करने में समर्थ होते हैं।

काशिकावृत्तिः (पञ्चमोऽध्यायः)-

७०

इकाई-1 प्राक् क्रीताच्छः (5.1.1)- ब्रह्मणस्त्वः (5.1.136)

१४

प्राक् क्रीताच्छः, उगवादिभ्यो यत् इत्यादीनि सूत्राणि ।

इकाई-2 धान्यानां भवने.... (5.2.1)- अहंशुभमोर्युस् (5.2.140)

१४

धान्यानां भवने क्षेत्रे खञ्, व्रीहिशाल्योर्ढक् इत्यादीनि सूत्राणि ।

इकाई-3 प्राग् दिशो विभक्तिः (5.3.1)- ज्यादयस्तद्राजाः (5.3.119)

१४

प्राग् दिशो विभक्तिः, किंसर्वनामबहुभ्योऽद्व्यादिभ्यः इत्यादीनि सूत्राणि ।

इकाई-4 पादशतस्य..... (5.4.1)-मद्रात् परिवापणे (5.4.67)

१४

पादशतस्य सङ्ख्यादेवर्वीप्सायां वुन् लोपश्च, दण्डव्यवसर्गयोश्च इत्यादीनि सूत्राणि ।

इकाई-5 समासान्ताः (5.4.68)-निष्प्रवाणिश्च (5.4.160)

१४

समासान्ताः, न पूजनात् किमः क्षेपे इत्यादीनि सूत्राणि ।

पाठ्यपुस्तकम्-

- काशिकावृत्ति- श्रीवामनजयादित्यविरचिता  
प्रकाशक- रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा।  
श्रीमद्दयानन्दवेदार्थमहाविद्यालयन्यास, 119 गौतमनगर, नई दिल्ली-49।  
ताराबुक एजेन्सी, वाराणसी।

सहायकग्रन्थ -

- वार्त्तिकप्रकाश- आचार्य आनन्दप्रकाश, प्रकाशक- चौखम्भा संस्कृत संस्थान वाराणसी।
- व्याकरणकारिकाप्रकाश- पं. सुदर्शनदेवाचार्य, प्रकाशक- हरियाण साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर हरयाणा।

**बी.ए. ऑनर्स-संस्कृतव्याकरणम्**  
**चतुर्थसत्रम्**  
**तृतीयपत्रम् - संस्कृतव्याकरणम् ( १० )**  
**Code- BVSAMN-403**

पूर्णाङ्काः-100  
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75  
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25  
समयः-होरात्रयम्

**उद्देश्य :**

- धातु को द्वित्व, सम्प्रसारण, आकारादेश एवं संहिता के अधिकार में विहित सन्धि एवं अन्य कार्यों का बोध कराना।
- सन्धियों का बोध कराके संस्कृत को सन्धिविच्छेदपूर्वक पढ़ने में समर्थ बनाना।

**परिणाम:**

- द्वित्व और सम्प्रसारणादि कार्यों से सम्बद्ध सिद्धियों को करने में प्रवीण होते हैं।
- सन्धियों के ज्ञान से अन्य पुस्तकों के पठन-पाठन में सरलता व सहजता आती है।
- शब्दों के स्वर निर्देश में पारंगत होकर वेदादि शास्त्रों को पढ़ने में निपुण हो जाते हैं।
- स्वर भिन्नता से अर्थ परिवर्तन को समझा पाते हैं।

**काशिकावृत्ति: (षष्ठाऽध्यायस्य प्रथमः पादः)-**

७०

**इकाई-1** एकाचो द्वे..... (6.1.1)- विभाषा परे (6.1.44)

१४

एकाचो द्वे प्रथमस्य, अजादेर्द्वितीयस्य, इत्यादीनि सूत्राणि ।

**इकाई-2** आदेच उपदेशेऽशिति (6.1.45)- औतोऽम्शासोः (6.1.94)

१४

आदेच उपदेशेऽशिति, न व्यो लिटि, इत्यादीनि सूत्राणि ।

**इकाई-3** एङि पररूपम् (6.1.95)- पारस्कर प्रभृतीनि च..... (6.1.157)

१४

एङि पररूपम्, ओमाङोश्च इत्यादीनि सूत्राणि ।

**इकाई-4** अनुदात्तं..... (6.1.158)- नृ चान्यतरस्याम् (6.1.184)

१४

अनुदात्तं पदमेकवर्जम्, कर्षात्वतो घञोऽन्त उदात्त इत्यादीनि सूत्राणि ।

**इकाई-5** तित् स्वरितम् (6.1.185 )- समासस्य (6.1.223)

१४

तित् स्वरितम्, तास्यनुदात्तेऽन्दिदुपदेशाल्ल..... इत्यादीनि सूत्राणि ।

**पाठ्यपुस्तकम्-**

- काशिकावृत्ति- श्रीवामनजयादित्यविरचिता  
प्रकाशक- रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा।  
श्रीमद्दयानन्दवेदार्थमहाविद्यालयन्यास, 119 गौतमनगर, नई दिल्ली-49।  
ताराबुक एजेन्सी, वाराणसी।

**सहायकग्रन्थ -**

- वार्तिकप्रकाश- आचार्य आनन्दप्रकाश, प्रकाशक- चौखम्भा संस्कृत संस्थान वाराणसी।
- व्याकरणकारिकाप्रकाश- पं. सुदर्शनदेवाचार्य, प्रकाशक- हरियाण साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर हरियाणा।



**बी.ए. ऑनर्स-संस्कृतव्याकरणम्**  
**चतुर्थसत्रम्**  
**चतुर्थपत्रम्- वैदिकदर्शनं साहित्यं च ( 1 )**  
**Code- BVSAMN-404**

पूर्णाङ्काः-100  
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75  
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25  
समयः-होरात्रयम्

**उद्देश्यः**

- प्रस्तुत वेदांश का स्मरण कराते हुए ब्रह्मचर्य व्रत के प्रति प्रेरित करना ।
- तर्कसंग्रह के माध्यम से न्याय एवं वैशेषिक दर्शन को समझने की योग्यता उत्पन्न करना।
- प्रश्नोपनिषद् के द्वारा ब्रह्म और सृष्टिक्रम का बोध कराना।
- मनुस्मृति के पठन से धर्म, तप, विद्याभ्यास और इन्द्रियसंयम के प्रति जागृति उत्पन्न कराना ।

**परिणाम-**

- ब्रह्मचर्य व्रत को अपने जीवन धारण करके समाज में शुभ गुणों को प्रसारित करता है ।
- तर्क के सामर्थ्य से सूक्ष्मतत्वों को समझने का सामर्थ्य आ जाता है ।
- उपनिषद् के तत्वों से अवगत हो कर उचित दृष्टि का विस्तार करता है ।
- उद्देश्य में उक्त तत्वों से युक्त होकर समाज में तद्विषयक ज्ञान के विस्तार से दिव्य व भव्य समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है ।

( 1 ) वेद :- ( अथर्ववेदः ब्रह्मचर्यसूक्तम् )	20
(क) मन्त्रकण्ठस्थीकरणम्	05
(ख) शब्दार्थपुरस्सरं स्वशब्दैरर्थबोधनम्	10
(ग) ऋषिदेवताछन्दोज्ञापनम्	05
( 2 ) दर्शनम् :- ( तर्कसंग्रहः )	15
(क) विषयात्मकप्रश्नाः	15
( 3 ) उपनिषद् ( प्रश्नोपनिषद् )	20
(क) कण्ठस्थीकरणम्	10
(ख) विषयात्मकप्रश्नाः	10
( 4 ) अन्यधार्मिकग्रन्थाः -( मनुस्मृतिः - अध्याय - 12 )	15
(क) श्लोकपूर्तिः	10
(ख) पदपदार्थज्ञापनम्	05

**पाठ्यपुस्तकम्-**

1. अथर्ववेदः - व्याख्याकारः डा० विश्वनाथ वेदालंकार  
प्रकाशकः - रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा।
2. तर्कसंग्रहः - प्रकाशकः - चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।
3. ईशादि नौ उपनिषद् प्रकाशकः - आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट- 455, खारी बावली, दिल्ली।

बी.ए. ऑनर्स-संस्कृतव्याकरणम्  
चतुर्थसत्रम्  
पंचमपत्रम्- **Communication Technology**  
**Code- BVSAAE-405**

पूर्णाङ्काः-100  
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75  
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25  
समयः-होरात्रयम्

Credit 2 (L-1|T-0|P-2)

## Objectives

The course helps the participants to,

- Understand the concept and purpose of Communication Technology
- Communicate with email by their own
- Join and organize online academic events
- Search the contents through Google and so
- Access various E-Resources to develop intelligence

Unit I	Introduction to Communication technology Definition, Types, Purpose and Input methods for Indian Languages/Scripts	(10 hours)
Unit II	Email Communication Gmail and Zimbra – How to create and use	(4 hours)
Unit III	Web Conference and Tools Google Meet, Google Classroom, Zoom – including live streaming	(6 hours)
Unit IV	Internet Search Google, YouTube, Blog	(10 hours)
Unit IV	E-Resources E-Dictionaries, E-Books, E-Learning, Wiki for Indian Languages	(10 hours)

## Outcomes

After completing the course, the learners will be able to

- Type Indian Script/s by using various Input methods
- Send and arrange emails
- Schedule and/or Join web conferences
- Search the contents through Google and so
- Access various E-Resources

**बी.ए. ऑनर्स-संस्कृतव्याकरणम्**  
**पञ्चमसत्रम्**  
**प्रथमपत्रम् - संस्कृतव्याकरणम् ( ११ )**  
**Code- BVSAMJ-501**

पूर्णाङ्काः-100  
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75  
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25  
समयः-होरात्रयम्

**उद्देश्य :**

- उदात्त स्वरित एवं अनुदात्त स्वर सम्बन्धि बोध व प्रयोग में समर्थ बनाना।
- उत्तरपद के रहते अलुग् तथा अन्य कार्यों का बोध करना व प्रयोगों का सिखाना।

**परिणामः**

- उत्तरपद के परे रहते होने वाले कार्य को करके शब्द संरचना में कुशल होकर समझाने में दक्ष बनते हैं।
- स्वर कार्यों का ज्ञान होता है तथा स्वयं स्वर निर्देशन में कुशल हो जाते हैं।
- विभिन्न शास्त्रों में प्रदत्त मन्त्रों की स्वर सम्बन्धी त्रुटियों को पहचान कर स्वयं शोधन कर पाता है शास्त्र परंपरा को अक्षुण्य रख पाते हैं।
- उदात्त अनुदात्त आदि स्वरों के परिवर्तन से होने वाले अर्थ परिवर्तन को समझकर गम्भीर संस्कृत संभाषण में समर्थ होते हैं।

**काशिकावृत्तिः (षष्ठाऽध्यायस्य द्वितीयतृतीयपादौ)-**

७०

**इकाई-1** बहुव्रीहौ प्रकृत्यापूर्वपदम् (6.2.1)- निष्ठोपसर्गपूर्व... (6.2.110)

१४

बहुव्रीहौ प्रकृत्यापूर्वपदम्, तत्पुरुषे तुल्यार्थतृतीयासप्तम्युपमानाव्यय... इत्यादीनि सूत्राणि ।

**इकाई-2** उत्तरपदादिः (6.2.111)- परादिश्छन्दसि बहुलम् (6.2.199)

१४

उत्तरपदादिः, कर्णो वर्णलक्षणात्, संज्ञौपम्ययोश्च इत्यादीनि सूत्राणि ।

**इकाई-3** अलुगुत्तरपदे (6.3.1)- पितरामातरा चच्छन्दसि (6.3.33)

१४

अलुगुत्तरपदे, पञ्चम्याः स्तोकादिभ्यः, ओजः सहोऽम्भस्तमसस्तृतीयायाः इत्यादीनि सूत्राणि ।

**इकाई-4** स्त्रियाः.... (6.3.34)-नगोप्राणिष्वन्यतरस्याम् (6.3.77)

१४

स्त्रियाः पुवद्भाषितपुंस्कादनूङ् समानाधिकरणे स्त्रियामपूरणीप्रियादिषु इत्यादीनि सूत्राणि ।

**इकाई-5** सहस्य सः..... (6.3.78)-सम्प्रसारणस्य (6.3.139)

१४

सहस्य सः संज्ञायाम्, ग्रन्थान्ताधिके च, द्वितीये चानुपाख्ये इत्यादीनि सूत्राणि ।

**पाठ्यपुस्तकम्-**

- काशिकावृत्ति- श्रीवामनजयादित्यविरचिता  
प्रकाशक- रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा।  
श्रीमद्दयानन्दवेदार्षमहाविद्यालयन्यास, 119 गौतमनगर, नई दिल्ली-49।  
ताराबुक एजेन्सी, वाराणसी।

**सहायकग्रन्थ -**

- वार्तिकप्रकाश- आचार्य आनन्दप्रकाश, प्रकाशक- चौखम्भा संस्कृत संस्थान वाराणसी।
- व्याकरणकारिकाप्रकाश- पं. सुदर्शनदेवाचार्य, प्रकाशक- हरियाण साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर हरियाणा।

**बी.ए. ऑनर्स-संस्कृतव्याकरणम्**  
**पञ्चमसत्रम्**  
**द्वितीयपत्रम् - संस्कृतव्याकरणम् ( १२ )**  
**Code- BVSAMJ-502**

पूर्णाङ्काः-100  
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75  
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25  
समयः-होरात्रयम्

**उद्देश्य :**

- अङ्ग के अधिकार में निर्दिष्ट दीर्घ, असिद्धवत् आर्धधातुक विषयक तथा भसंज्ञा सम्बन्धि कार्यों का बोध।

**परिणामः**

- शास्त्रों में प्रयुक्त होने वाले क्लिष्ट शब्दों का प्रकृति प्रत्यय विभागपूर्वक अर्थों का बोधन कर प्राचीन शास्त्रों के संरक्षण व सम्बर्धन में सहायक होते हैं।
- शब्द निर्माण में कुशलता आती है।
- धातु रूपों में होने वाले विभिन्न परिवर्तनों का बोध कर समझने व समझाने में समर्थ हो जाते हैं।
- विशिष्ट शब्दों के प्रयोग पूर्वक परिमार्जित निबन्ध लेखन करने में विशेष कुशलता व निपुणता आती है।

**काशिकावृत्तिः (षष्ठाऽध्यायस्य चतुर्थः पादः)-**

७०

**इकाई-1** अडस्य (6.4.1)- हन्तेर्जः (6.4.36)

१४

अडस्य, हलः, नामि, नसृचतसृ इत्यादीनि सूत्राणि ।

**इकाई-2** अनुदातोपदेश.....(6.4.37)- मयतेरिदन्य..... (6.4.70)

१४

अनुदातोपदेशवनतितनोत्यादीनामनुनासिक लोपो झलि क्ङिति इत्यादीनि सूत्राणि ।

**इकाई-3** लुङ्लड्लुङ्लक्ष्वडुदात्तः (6.4.71)- अङितश्च (6.4.103)

१४

लुङ्लड्लुङ्लक्ष्वडुदात्तः, आडजादीनाम्, छन्दस्यपि दृश्यते इत्यादीनि सूत्राणि ।

**इकाई-4** चिणो लुक् (6.4.104)-अर्वणस्त्रसावनजः (6.4.127)

१४

चिणो लुक्, अतो हेः, उतश्च प्रत्ययादसंयोगपूर्वात् इत्यादीनि सूत्राणि ।

**इकाई-5** मघवा बहुलम् (6.4.128)-ऋत्व्यवास्त्व्य..... (6.4.175)

१४

मघवा बहुलम्, भस्य, पादः पत्, वसोः सम्प्रसारणम् इत्यादीनि सूत्राणि ।

**पाठ्यपुस्तकम्-**

- काशिकावृत्ति- श्रीवामनजयादित्यविरचिता  
प्रकाशक- रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा।  
श्रीमद्दयानन्दवेदार्थमहाविद्यालयन्यास, 119 गौतमनगर, नई दिल्ली-49।  
ताराबुक एजेन्सी, वाराणसी।

**सहायकग्रन्थ -**

- वार्तिकप्रकाश- आचार्य आनन्दप्रकाश, प्रकाशक- चौखम्भा संस्कृत संस्थान वाराणसी।
- व्याकरणकारिकाप्रकाश- पं. सुदर्शनदेवाचार्य, प्रकाशक- हरियाण साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर हरियाणा।

**बी.ए. ऑनर्स-संस्कृतव्याकरणम्**  
**पञ्चमसत्रम्**  
**तृतीयपत्रम् - वैदिकदर्शनं साहित्यं च ( 2 )**  
**Code- BVSAMN-503**

पूर्णाङ्काः:-100  
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः:-75  
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः:-25  
समयः:-होरात्रयम्

**उद्देश्य-**

- वेदों में निहित गूढतत्वों से अवगत कराना।
- सांख्यदर्शन के द्वारा प्रसिद्ध आख्यायिकाओं के माध्यम से विवेक ज्ञान के साधनों का बोध कराना।
- तैत्तिरीय उपनिषद् में प्रोक्त शिक्षावल्ली के माध्यम से शिक्षा के मूलभूत तत्वों से अवगत कराना।
- वानप्रस्थ तथा संन्यासधर्म विषय का ज्ञान प्रदान करना।

**परिणाम-**

- वेदनिहिततत्वों से अवगत होकर समाज में तद्विषयक ज्ञान का विस्तार करता है ।
- आख्यायिकाओं द्वारा अर्जित तत्वज्ञान से स्वयं के जीवन को प्रकाशित करता हुआ समाज का उचित मार्गदर्शन करता है।
- शिक्षा के आदर्शतत्वों को जीवन में अवतरित करता हुआ उनका विस्तार करता है।
- संन्यास तथा वानप्रस्थ के महत्व को समझ कर संन्यास को जीवन का अंग बनाकर समाज में त्याग की महत्ता को प्रतिष्ठापित करता है ।

( 1 ) वेद :- ( यजुर्वेद: - 36 )	20
(क) मन्त्रकण्ठस्थीकरणम्	05
(ख) शब्दार्थपुरस्सरं स्वशब्दैरर्थबोधनम्	10
(ग) ऋषिदेवताछन्दोज्ञापनम्	05
( 2 ) दर्शनम् :- ( सांख्यदर्शनम्, चतुर्थोऽध्यायः )	20
(क) कण्ठस्थीकरणम्	05
(ख) सूत्रार्थबोधनम्	10
(ग) विषयात्मकप्रश्नाः	05
( 3 ) उपनिषद् - ( तैत्तिरीयोपनिषद् शिक्षावल्ली )	15
(क) कण्ठस्थीकरणम्	05
(ख) विषयात्मकप्रश्नाः	10
( 4 ) अन्यधार्मिकग्रन्थाः -मनुस्मृतिः ( अध्याय - 6, आदितः पंचाशत्श्लोकाः )	15
(क) श्लोककण्ठस्थीकरणम्	10
(ख) पदपदार्थज्ञापनम्	05

**सहायकग्रन्थाः -**

1. यजुर्वेदः - व्याख्याकारः महर्षि दयानन्द सरस्वती  
प्रकाशकः - वैदिक पुस्तकालय, अजमेर, राजस्थान।
2. सांख्यदर्शनम् -प्रकाशकः - चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।
3. ऐतरेयोपनिषद् - प्रकाशकः - गीताप्रेस गोरखपुर।
4. मनुस्मृतिः - प्रकाशकः - आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट- 455, खारी बावली, दिल्ली।

बी.ए. ऑनर्स-संस्कृतव्याकरणम्

पञ्चमसत्रम्

चतुर्थपत्रम् - Yog Ayurved & Naturopathy

Code- BVSASE-504

पूर्णाङ्काः:-100

बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः:-75

आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः:-25

समयः:-होरात्रयम्

बी.ए. ऑनर्स-संस्कृतव्याकरणम्  
षष्ठसत्रम्

प्रथमपत्रम् - संस्कृतव्याकरणम् ( 13 )

Code- BVSAMJ-601

पूर्णाङ्कः-100

बाह्यमूल्याङ्कनाङ्कः-75

आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्कः-25

समयः-होरात्रयम्

उद्देश्य :

- तिङ् तथा सुप् प्रत्ययों से सम्बद्ध आदेश एवं आगमों के विधान का सम्यक् ज्ञान कराना।
- परस्मैपदपरक वृद्धि, आर्धधातुक प्रत्ययों को इट् निषेध, इट् विधि, तथा युष्मद् अस्मद् इत्यादि सर्वनाम शब्दों को विभक्ति के परे रहते कार्यों के विधान का बोध ।
- पूर्वोत्तरपद वृद्धि, धातु एवं विभक्ति सम्बन्धी विविध कार्यों का बोध ।
- धातु एवं अभ्यास सम्बन्धी विविध कार्यों का ज्ञान ।

परिणामः

- धातु एवं अभ्यास सम्बन्धी विविध कार्यों को जानकर समझाने में समर्थ होते हैं।
- संस्कृत भाषा में प्रयुक्त होने वाले सुबन्त और तिङन्त पदों में के निर्माण में दक्ष हो जाता है।
- भाषा में प्रयुक्त होने वाले कृदन्त एवं तिङन्त पदों में विभिन्न विषयों में निबन्ध से समाज का उचित मार्गदर्शन कर पाते हैं।
- तिङन्त में होने वाले विविध कार्यों का बोधन कराने से अन्य शास्त्रों के गाम्भीर्य को समझने में योग्य बनकर समाज में उन शास्त्रों के ज्ञान का प्रसार करते हैं।

काशिकावृत्तिः (सप्तमोऽध्यायः)-

७०

इकाई-1 युवोरनाकौ (7.1.1)- गोः पादान्ते (7.1.57)

१४

युवोरनाकौ, आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम् इत्यादीनि सूत्राणि ।

इकाई-2 इदितो नुम् धातोः (7.1.58)- बहुलं छन्दसि (7.1.103)

१४

इदितो नुम् धातोः, शे मुचादीनाम्, मस्जिनशोर्झलि इत्यादीनि सूत्राणि ।

इकाई-3 सिचि वृद्धिः..... (7.2.1)- किति च (7.2.118)

१४

सिचि वृद्धिः परस्मैपदेषु, अतो ल्रान्तस्य, वदब्रजहलन्तस्ययाचः इत्यादीनि सूत्राणि ।

इकाई-4 देविकाशिंशपादित्य.... (7.3.1)-आडो नास्त्रियाम् (7.3.120)

१४

देविकाशिंशपादित्यवाड्दीर्घसत्रश्रेयसामात्, केकयमित्रयुप्रलयानां यादेरियः इत्यादीनि सूत्राणि ।

इकाई-5 णौ चङ्युपधाया..... (7.4.1)-ई च गणः (7.4.97)

१४

णौ चङ्युपधाया ह्रस्वः, नाग्लोपिशास्वृदिताम् इत्यादीनि सूत्राणि ।

पाठ्यपुस्तकम्-

- काशिकावृत्ति- श्रीवामनजयादित्यविरचिता  
प्रकाशक- रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा।  
श्रीमद्दयानन्दवेदार्थमहाविद्यालयन्यास, 119 गौतमनगर, नई दिल्ली-49।  
ताराबुक एजेन्सी, वाराणसी।

सहायकग्रन्थ -

- वार्तिकप्रकाश- आचार्य आनन्दप्रकाश, प्रकाशक- चौखम्भा संस्कृत संस्थान वाराणसी।
- व्याकरणकारिकाप्रकाश- पं. सुदर्शनदेवाचार्य, प्रकाशक- हरियाण साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर हरयाणा।

**बी.ए. ऑनर्स-संस्कृतव्याकरणम्**  
**षष्ठसत्रम्**  
**द्वितीयपत्रम् - संस्कृतव्याकरणम् ( 14 )**  
**Code- BVSAMJ-602**

पूर्णाङ्काः-100  
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75  
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25  
समयः-होरात्रयम्

**उद्देश्य :**

- पदसम्बन्धि द्वित्व, पद से उत्तर युष्मद् अस्मद् को होने वाले आदेश एवं स्वरविषयक बोध ।
- पूर्वत्रासिद्ध प्रकरण के अन्तर्गत निष्ठा, प्लुत उदात्त एवं संहिता विषयक मूर्धन्य, णत्व इत्यादि विविध कार्यों का बोध कराना

**परिणामः**

- संस्कृत भाषा में प्रयुक्त होने वाले वीप्सादि अर्थों का बोधन करा सकता है व लालित्यपूर्ण संस्कृत सम्भाषण कर पाते हैं।
- भाषा में प्रयुक्त होने वाले शब्दों में षत्व और णत्व का विवेचन पूर्वक बोध प्राप्त कर भाषागत त्रुटियों पर विजय प्राप्त कर लेते हैं।
- विविध शास्त्रों में प्रयुक्त शब्दों के नकार लोप, रुत्वादि कार्यों को जानकर उनके स्पष्ट अर्थों को अधिगम करते हुए निभ्रान्त बोध कर शास्त्रों के स्पष्ट व शुद्ध स्वरूप को जानकर अपने जीवन को उन्नत बनाता है।

**काशिकावृत्तिः (अष्टमोऽध्यायः)-**

७०

**इकाई-1** सर्वस्य द्वे (8.1.1)- विभाषितं विशेषवचने.... (8.1.74)

१४

सर्वस्य द्वे, तस्य परमामेडितम्, अनुदात्तं च इत्यादीनि सूत्राणि।

**इकाई-2** पूर्वत्रासिद्धम् (8.2.1)- तयोर्यावचि.... (8.2.108)

१४

पूर्वत्रासिद्धम्, नलोपः सुप्स्वरसंज्ञातुग्विधिषु कृति, नमुने इत्यादीनि सूत्राणि।

**इकाई-3** मतुवसो रु सम्बुद्धौ... (8.3.1)- इडाया वा (8.3.54)

१४

मतुवसो रु सम्बुद्धौ छन्दसि, अत्रानुनासिकः पूर्वस्य तु वा इत्यादीनि सूत्राणि।

**इकाई-4** अपदान्तस्य मूर्धन्यः (8.3.55)-निव्यभिभ्योऽङ्..... (8.3.117)

१४

अपदान्तस्य मूर्धन्यः, सहेः साडः सः, इणकोः इत्यादीनि सूत्राणि।

**इकाई-5** रषाभ्यां नो णः..... (8.4.1)-अ अ (8.4.68)

१४

रषाभ्यां नो णः समानपदे, अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि इत्यादीनि सूत्राणि।

**पाठ्यपुस्तकम्-**

- काशिकावृत्ति- श्रीवामनजयादित्यविरचिता  
प्रकाशक- रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा।  
श्रीमद्दयानन्दवेदार्थमहाविद्यालयन्यास, 119 गौतमनगर, नई दिल्ली-49।  
ताराबुक एजेन्सी, वाराणसी।

**सहायकग्रन्थ -**

- वार्तिकप्रकाश- आचार्य आनन्दप्रकाश, प्रकाशक- चौखम्भा संस्कृत संस्थान वाराणसी।
- व्याकरणकारिकाप्रकाश- पं. सुदर्शनदेवाचार्य, प्रकाशक- हरियाण साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर हरयाणा।



**बी.ए. ऑनर्स-संस्कृतव्याकरणम्**  
**षष्ठसत्रम्**  
**तृतीयपत्रम् - वैदिकदर्शनं साहित्यं च ( 3 )**  
**Code- BVSAMN-603**

पूर्णाङ्कः:-100  
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्कः:-75  
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्कः:-25  
समयः:-होरात्रयम्

**उद्देश्य :**

- काव्यदीपिका में श्रीकान्तिचन्द्रभट्टाचार्य के द्वारा दृश्यश्रव्य काव्य के विभाग व लक्षण, अभिनय के स्वरूप तथा उसके भेदों का बोध।
- यास्क मुनि कृत निरुक्त के माध्यम से निघण्टु शब्द की व्याख्या, पद के चार भेद तथा षड्विकारों का ज्ञान कराना।
- कठोपनिषद् में वर्णित उद्दालक से नचिकेता के प्रश्न, यम नचिकेता संवाद का बोध कराना।
- गीता के 16वें 17वें अध्याय के माध्यम से दैवी आसुरी सम्पद् तथा श्रद्धात्रय विभाग का भलीभाँति बोध कराना।

**परिणामः**

- दृश्यश्रव्य काव्य और अभिनय के भेदों को पहचान कर अभिनय की महत्ता से समाज को परिचित करा पाता है।
- चार पद और षड् भावविकारों को जानकर तत्व के बोधन में समर्थ हो जाता है।
- वैशेषिक दर्शन के मूल सिद्धान्तों से अवगत होकर कुशलतापूर्वक बोधन व जागरण करने में समर्थ होता है।
- यम नचिकेता संवाद से तत्वबोध पूर्वक समस्त प्राणियों में आत्मदृष्टि रखते हुए जगतहित में प्रवृत्त हो कर समाज में हिंसा, लोभ, लालच के उन्मूलन में समर्थ होता है।
- दैवी सम्पद् से युक्त होकर एवं श्रद्धा के तत्व को समझकर समाज में तद्विषयक ज्ञान का विस्तार से दिव्य व भव्य समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

**इकाई-1 काव्यशास्त्रम्-( काव्यदीपिका शिखा 4 )**

१५

(क) विषयात्मकप्रश्नाः

**इकाई-2 निरुक्त ( नैघण्टुककाण्ड- प्रथमाध्यायस्य-१,२,५ पादाः )**

१५

निघण्टुशब्दस्य व्याख्या, पदस्य चत्वारः भेदाः, षड्भाव विकाराः इत्यादयः।

**इकाई-३ दर्शनम् ( वेदान्तसारः )**

१५

वेदान्तसारस्य प्रतिपाद्यविषयः, मायायाः स्वरूपम्, ब्रह्म, आत्मा, ईश्वरः इत्यादिकम्।

(क) विषयात्मकप्रश्नाः

**इकाई-४ उपनिषद् कठोपनिषद् ( प्रथमोऽध्यायः )**

१०

(क) कण्ठस्थीकरणम् (ख) शब्दार्थपुरस्सरं स्वशब्दैरर्थबोधनम्

**इकाई-5 श्रीमद्भगवद् गीता ( अध्याय-16, 17 )**

१५

दैवी सम्पद् का लक्षण, आसुरी सम्पद् का लक्षण इत्यादि। श्रद्धात्रय विभाग इत्यादि।

(क) श्लोकपूर्तिः (ख) पदपदार्थज्ञापनम्

**पाठ्यपुस्तकम्-**

- **काव्यदीपिका**- विद्यारत्नकान्तिचन्द्रभट्टाचार्येण संगृहीता, प्रकाशक- मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि. देहली।
- **निरुक्तभाष्य**- श्री चन्द्रमणि विद्यालंकार पालीरत्न, प्रकाशक- हरयाणा साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर (हरयाणा)।
- **वेदान्तसारः**- श्री सदानन्दप्रणीतः, प्रकाशक - चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।
- **ईशादि नौ उपनिषद्**- प्रकाशक- गीताप्रेस गोरखपुर।
- **मनुस्मृतिः** - प्रकाशक- आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट-455, खारी बावली, दिल्ली।

**बी.ए. ऑनर्स-संस्कृतव्याकरणम्**  
**षष्ठसत्रम्**  
**चतुर्थपत्रम् - वैदिकदर्शनं साहित्यं च ( 4 )**  
**Code- BVSAMN-604**

पूर्णाङ्काः-100  
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75  
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25  
समयः-होरात्रयम्

**उद्देश्य :**

- काव्यदीपिका में श्रीकान्तिचन्द्रभट्टाचार्य के द्वारा दोष निरूपण तथा उनके भेद एवं गुणों के स्वरूप व विभागों का बोध करना।
- निरुक्त के दैवत काण्ड के द्वारा दैवतशब्द की व्याख्या त्रिविधा ऋचा का बोध प्रदान करना।
- गौतम ऋषि कृत न्याय दर्शन के माध्यम से प्रमाण प्रमेय आदि का बोध प्रदान करना।
- गीता के 18वें अध्याय के द्वारा मोक्ष तथा सन्यास योग का ज्ञान प्रदान करना।

**परिणामः**

- काव्य के दोष व गुण के निरूपण तथा उनके भेदों का उदाहरण सहित समझकर निर्दोष काव्य रचना में निरत रहता है।
- त्रिविध ऋचाओं के ज्ञान से वेद के तत्त्वों का बोधन कर प्राचीन ज्ञान को प्रचारित व प्रसारित करने में निपुण हो जाता है।
- प्रमाण आदि के माध्यम से सत् असत् के मध्य विवेचन पूर्वक व्याख्यान कर समाज में व्याप्त तिमिर के नाश में उत्कृष्ट भूमिका निभाता है।
- सन्यास व त्याग के महत्व से युक्त श्लोकों के कण्ठस्थीकरण व अर्थ बोधन से सन्यास को जीवन का अङ्ग बनाकर समाज में त्याग की महत्ता को प्रतिष्ठापित करता है।

**इकाई-1 काव्यशास्त्रम्- (काव्यदीपिका शिखा 5, 6 )**

**१५**

दोषनिरूपणं तेषां भेदश्च, गुणानां निरूपणम्।

(क) विषयगतप्रश्नाः

**इकाई-2 निरुक्त- दैवतकाण्ड (सप्तमाध्यायस्य-१,२,३ पादाः)**

**१५**

दैवतं शब्दस्य व्याख्या, त्रिविधाः ऋचः - परोक्षकृताः, प्रत्यक्षकृताः तथा आध्यात्मिक्यश्च, तिस्र एव देवता इति नैरुक्ताः इत्यादयः। (क) विषयगतप्रश्नाः

**इकाई-३ दर्शनम्- (न्यायदर्शनम्, प्रथमोऽध्यायः प्रथमपादः)**

**१५**

प्रमाण प्रमेय संशय इत्यादि तत्त्वानां विवेचनम्, प्रत्यक्षानुमान इत्यादि प्रमाणानां विवेचनम्।

(क) कण्ठस्थीकरणम् (ख) सूत्रार्थबोधनम् (ग) विषयात्मकप्रश्नाः

**इकाई-४ उपनिषद् (कठोपनिषद् ) ( द्वितीयोऽध्याय )**

**१५**

परमेश्वरदर्शने इन्द्रियां बहिर्मुखता एव विघ्नः, अविवेकी और विवेकियों का अन्तर तथा जिनकी कृपा से इन्द्रियाँ और अन्तः करण अपना-अपना कार्य करते हैं, उन सर्वव्यापी परमेश्वर के ज्ञान से शोक-निन्दा सब दोषों की निवृत्ति का कथन इत्यादि। (क) कण्ठस्थीकरणम् (ख) शब्दार्थपुरस्सरं स्वशब्दैरर्थबोधनम्

**इकाई-5 श्रीमद्भगवद् गीता (अध्याय-18)**

**१५**

सन्यास तथा त्याग इन दो शब्दों के अर्थों का भेद जानने की इच्छा से योगेश्वर कृष्ण से अर्जुन का प्रश्न इत्यादि। (क) कण्ठस्थीकरणम् (ख) शब्दार्थपुरस्सरं स्वशब्दैरर्थबोधनम्

**पाठ्यपुस्तकम्-**

**१. काव्यदीपिका-** विद्यारत्नकान्तिचन्द्रभट्टाचार्येण संगृहीता

प्रकाशकः- मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा० लि०, देहली।

**२. निरुक्तभाष्य-** श्री चन्द्रमणि विद्यालंकार पालीरत्न

प्रकाशकः- हरयाणा साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर (हरयाणा)

**३. न्यायदर्शनम् - प्रकाशकः-** चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।

**४. एकादशोपनिषद्,** डॉ. सत्यव्रत सिद्धांतालंकार, प्रकाशक - विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द।

**5. श्रीमद्भगवद्गीता - स्वामी रामदेव, प्रकाशक - दिव्य प्रकाशन, पतंजलि योगपीठ, हरिद्वार।**